VIDYA
UNIVERSITY PRESS

समाज एवं संस्कृति

BASED ON NEP GUIDELINES

6

1. अतीत का अध्ययन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) बी० सी० और ए० डी० 2. (c) अशोक स्तंभ 3. (c) पुरातात्त्विक
4. (a) मगस्थनीज 5. (c) कश्मीर

(ख) 1. आगे 2. इतिहास 3. धार्मिक, लौकिक 4. न्यूमिस्मैटिक्स
5. ऋग्वेद

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (v) 5. (iii)

(ङ) 1. इतिहास से अभिप्राय प्राचीन घटनाओं के वास्तविक विवरण से है। यह प्राचीनतम से लेकर वर्तमान समय तक के लोगों, स्थानों एवं घटनाओं का कालक्रमानुसार दस्तावेज है।

2. हमें अपने अतीत को पढ़ने की आवश्यकता है क्योंकि यह हमारे इतिहास को जानने में और उससे सीखने में हमारी सहायता करता है। यह हमारे लिए एक नये विश्व का निर्माण करने में सहायता करता है जो अतीत की सभी बुराइयों से मुक्त हो। जैसे—दासता, नस्लवाद, जातिवाद आदि।

3. पुरातत्त्वशास्त्र अतीत के अवशेषों का अध्ययन है, अत: उन वस्तुओं एवं संरचनाओं का अध्ययन, जिन्हें किसी स्थान पर खुदाई करके प्राप्त किया जाता है।

4. अतीत का अध्ययन करने के लिए पुरातात्विक स्रोत प्राचीन इमारतों तथा स्मारकों, सिक्कों, गोलियों, मुहरों, मिट्टी के बर्तनों, औजारों, रेखाचित्रों, मूर्तियों तथा अन्य वस्तुओं के अवशेष हैं, जिनका प्रयोग प्राचीन लोगों द्वारा किया गया था।

5. शिलालेख शाही आदेश हैं जो पत्थरों, स्तंभों आदि पर खुदे हुए हैं। शिलाओं, पत्थरों, खंभों, धातु की पट्टियों, मिट्टी की तख्तियों आदि पर उत्कीर्ण लेख अभिलेख कहलाते हैं।

(च) 1. ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन से हमें अतीत की जानकारी मिलती हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—

(i) पुरातात्विक स्रोत और (ii) साहित्यिक स्रोत।

इनका विवरण इस प्रकार है—

(i) पुरातात्विक स्रोत—पुरातात्विक स्रोतों में स्मारकों या प्राचीन इमारतों के अवशेष, सिक्के, तख्तियाँ, मुहरें, मिट्टी के बर्तन, उपकरण, चित्रकथा, मूर्तियाँ, चित्र तथा अन्य लेख जो प्राचीन लोगों द्वारा उपयोग किए गए थे।

(ii) साहित्यिक स्रोत—साहित्यिक स्रोतों में शामिल हैं—
(क) धार्मिक साहित्य और (ख) धर्मनिरपेक्ष साहित्य

(क) धार्मिक साहित्य—भारत के धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत ब्राह्मण साहित्य (वेद, स्मृति, उपनिषद, पुराण, आरण्यक आदि) तथा जैन-बौद्ध साहित्य सम्मिलित हैं।

(ख) लौकिक साहित्य—धर्मनिरपेक्ष (लौकिक) साहित्य में अन्य कृतियाँ शामिल हैं पाणिनि के अष्टाध्यायी तथा पतंजलि के महाभाष्य; जैसे—व्याकरण ग्रन्थों तक में उस समय की बहुमूल्य ऐतिहासिक सूचनाएँ निहित हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कालिदास का मालविकाग्निमित्रम् शूद्रक का मृच्छकटिकम तथा दण्डी का दशकुमारचरित आदि अन्य कृतियाँ हैं।

इन कृतियों के अतिरिक्त हम हर्षचरित, विक्रमांकदवचरित आदि जीवनियों से भी अतीत के बारे में जानते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में बड़ी जानकारी विदेशियों के वृतान्त से मिलती है; जैसे—यूनानी राजदूत मेगस्थनीज की इण्डिका फाह्यान और ह्वेनसांग के लेख।

2. इतिहास के अध्ययन के उद्देश्य की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है—
   (i) इतिहास के माध्यम से हम अपने पूर्वजों, उनके संघर्षों तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में सीखते हैं।
   (ii) यह हमें मनुष्य की सभ्यता तथा संस्कृति के विकास की क्रमिक प्रक्रिया की जानकारी प्रदान करता है।
   (iii) यह हमें अतीत की समस्याओं को समझने और वर्तमान समय की समस्याओं के श्रेष्ठ तरीके से समाधान के बारे में समझ विकसित करने में मदद करता है।
   (iv) इतिहास का अध्ययन हमें एक नए विश्व का निर्माण करने में सहायता करता है जो अतीत की सभी बुराइयों से मुक्त हो; जैसे—दासता, नस्लवाद, जातिवाद आदि।
3. साहित्यिक स्रोत विभिन्न विद्वानों द्वारा अतीत में लिखित विभिन्न पुस्तकें (पांडुलिपियाँ) हैं। भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए मुख्य साहित्यिक स्रोत हैं—
   (i) **धार्मिक साहित्य**—भारत के धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत ब्राह्मण साहित्य (वेद, स्मृति, उपनिषद, पुराण, आरण्यक आदि) तथा जैन-बौद्ध साहित्य और महाकाव्य सम्मिलित हैं।
   (ii) **लौकिक साहित्य**—लौकिक साहित्यिक कृतियों में पाणिनी की अष्टाध्यायी, पतंजलि की महाभाष्य, सोमदेव की कथासरितसागर, विशाखादत्त की मुद्राराक्षस, क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामंजरी, कौटिल्य की अर्थशास्त्र, कामन्दक की नीतिसार, कालिदास की मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रक की मृच्छकटिकम् और दण्डी की दशकुमारचरित जैसे व्याकरण ग्रंथ सम्मिलित हैं।

(iii) जीवनियाँ; जैसे—बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित, बिल्हण द्वारा रचित विक्रमांकदेवचरित।

(iv) कल्हण की 'राजतरंगिणी' कश्मीर का प्राचीन काल से बारहवीं शताब्दी तक का इतिहास प्रस्तुत करती है।

(v) तमिल भाषा में रचित 'संगम साहित्य' दक्षिण भारतीय चोल एवं पाण्डय शासकों के शासनकाल में लोगों के जीवन एवं संस्कृति सम्बन्धी सूचनाओं के प्रामाणिक स्रोत हैं।

(vi) **विदेशियों के वृत्तान्त**—सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान उन विदेशियों द्वारा दिए गए जो भारत आए तथा अपने वृत्तान्त लिखें। जैसे—चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहने वाले यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा लिखित इण्डिका, चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेनसांग, ई-त्सिंग द्वारा लिखित वृत्तान्त।

(vii) **मुस्लिम विद्वानों के वृत्तान्त**—जैसे अलबरूनी की तहकीक-ए-हिन्द।

(viii) दक्षिण भारतीयों के सामाजिक रीति-रिवाजों पर वेनिस यात्री मार्को पोलों का वृत्तान्त।

4. प्राचीन काल में शासकों ने चट्टानों और स्तंभों जैसी कठोर सतहों पर अपनी विजयों को उत्कीर्ण कराया ताकि उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनका नाम तथा प्रसिद्धि लंबे समय तक बनी रहे। चट्टानों तथा खंभों पर आज तक भी शिलालेख पाये जाते हैं तथा उनके अध्ययन से हमें बहुत कुछ पता चला। सम्राट अशोक के अनेक राज्यादेश हमें उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी देते हैं। इसी प्रकार, खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख तथा रूद्रदमन का जूनागढ़ शिलालेख उस समय की प्रामाणिक जानकारी प्रदान करता है।

❑

2. प्रारम्भिक मानव-I

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) मध्य-पाषाण युग 2. (b) शैलाश्रयों में 3. (a) अग्नि
4. (a) पत्थर से 5. (b) मध्य प्रदेश

(ख) 1. उत्तरोत्तर पाषाण युग 2. बीरभानपुर 3. पत्थर का युग
4. फ्लिण्ट 5. पुरा-पाषाण

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (ii) 4. (iii)

(ङ) 1. 'भोजन संग्रहकर्त्ता' का अर्थ प्रारम्भिक मनुष्य से है जो जंगल के पौधों, जड़ों, फलों तथा कन्दमूल आदि से अपना भोजन एकत्र करता था अथवा जानवरों का शिकार करता था।

2. पाषाण युग के औजार अपरिष्कृत कुल्हाड़ियाँ, भाले, चाकू, हथौड़े तथा खोदने के औजार थे।
3. दक्कन में पुरा पाषाण युग के तीन प्रमुख स्थल हैं—(i) मध्य भारत में नर्मदा घाटी में नरसिंहपुर (ii) महाराष्ट्र में गोदावरी की सहायक प्रवरा नदी के तट पर नेवासा (iii) आन्ध्र प्रदेश में गिहलुर तथा करीमपुडी।
4. आदिम मानव फ्लिण्ट (गहरे भूरे रंग का पत्थर) का प्रयोग करता था क्योंकि यह नुकीली तेज धार वाला तथा चीर-फाड़ में पर्याप्त था।
5. आदिम मानव मौसम तथा प्रकृति के प्रकोपों से घिरा हुआ था। वह रोगों तथा महामारियों से डरता था। उसका गहन विश्वास था कि प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु में 'आत्मा' का निवास है। भय के कारण यह प्रकृति की पूजा तथा इन आत्माओं को प्रसन्न करने में जुट गया।

(च) 1. पुरापाषाण काल का मानव आग का प्रयोग निम्नलिखित तीन प्रकार से करता था—
(i) स्वयं को गर्म रखने के लिए
(ii) अँधेरी गुफाओं में प्रकाश करने में और
(iii) सोते समय जंगली जानवरों को डराने तथा भोजन को भूनने के लिए।
2. पुरापाषाण काल में मानव ने गुफा की छतों तथा दीवारों पर कटी-फटी रेखाओं के रूप में चित्र बनाना प्रारम्भ किया। उसने जंगली जानवरों जैसे—जंगली भैंस, भालू, घोड़े, बारहसिंगे तथा अन्य जानवरों के चित्रों को चित्रित किया। उसने इन आकृतियों को अपने औजारों पर भी उकेरा। उसने हड्डियों, हाथी दाँत तथा सुन्दर पत्थरों के आभूषण भी बनाए।
3. **पत्थर पर पत्थर**—इस तकनीक में, वह पत्थर जिससे हथियार (कोर) बनाना था, को एक हाथ में पकड़ा जाता था। हथौड़े की तरह उपयोग होने वाला पत्थर दूसरे हाथ में पकड़ा जाता था तथा उससे पहले पर छिलके उतारने के लिए वार किया जाता था जब तक आवश्यक आकृति प्राप्त नहीं हो जाती थी।
4. आदिम मानव में विद्यमान धार्मिक विश्वास सम्बन्धी कुछ तत्त्व निम्नलिखित थे—
(i) उसे विश्वास था कि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में अच्छी और बुरी आत्मा होती है।
(ii) वह अपने मृत पूर्वजों की पूजा करता था।
(iii) वह मृतकों को उनके उपकरणों एवं भोज्य पदार्थों सहित दफनाता था, उसे विश्वास था कि मृत आत्मा को दूसरे संसार में इन वस्तुओं की आवश्यकता होगी।
(iv) वह बिजली चमकने तथा मेघ गरजने से बहुत भयभीत होता था और मानता था कि ये घटनाएँ दैवीय क्रोध की अभिव्यक्ति हैं।
(v) वह जादुई शक्तियों में विश्वास करता था।
5. प्रारम्भिक मानव ने इस प्रकार के चित्र इसलिए बनाए क्योंकि वे शिकार तथा भोजन संग्रह करके अपना जीवन-यापन करता थे। वे जानवरों का शिकार करने, मांस

काटने, लकड़ी काटने तथा जड़ व कंद खोदने के लिए पत्थरों के औजारों का प्रयोग करते थे। वे जीवित रहने के लिए पूर्णत: प्रकृति पर निर्भर थे।

कीजिए और सीखिए

(छ) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)
6. (✓) 7. (✓) 8. (✗) 9. (✓) 10. (✓)

❑

3. प्रारम्भिक मानव-II

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) 10,000 ई०पू० में हुई 2. (a) 8000 ई०पू० में 3. (c) कुत्ता

(ख) 1. आग तथा पहिए 2. ताँबे, टिन 3. मिट्टी के बर्तन 4. कृषि

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iii) 4. (iv)

(ङ) 1. कृषि की शुरुआत ने मनुष्य के व्यवस्थित जीवन को जन्म दिया।

2. नवपाषाण काल के मानव ने कुत्तों, भेड़ों, बकरियों, मवेशियों, घोड़ों, ऊँटों आदि को पालतू बनाया था।

3. पाषाण युग के अन्त में, लगभग 4,000 ई०पू० को ताम्र-पाषाण युग (चाल्को = ताँबा + लिपिक = पाषाण) कहते हैं। इस काल में मनुष्य ने औजार बनाने के लिए पत्थर के साथ-साथ धातु का भी प्रयोग करना शुरू किया।

4. आग तथा पहिए की खोज ने आदिम मानव के जीवन में क्रांति ला दी।

(च) 1. कृषि की शुरूआत ने आदिम मानव के जीवन में परिवर्तन ला दिया। वह भोजन संग्रहक से भोजन उत्पादक हो गया। उसके खान-पान में बहुत बड़ा बदलाव आया।

2. नव पाषाण काल की मुख्य खोज थी—
(i) आग (ii) पहिए (iii) मिट्टी के बर्तन बनाना (iv) नए पत्थर के औजार और (v) धातु के औजार।
इन खोजों ने प्रारंभिक मनुष्य को एक व्यवस्थित जीवन जीने में सहायता की, क्योंकि इन उपकरणों की सहायता से वह जंगलों को साफ करके भूमि पर फसल उगा सकता था तथा भोजन को बर्तनों में इकट्ठा कर सकते थे। लोगों का समूह ऐसी जगह बसने लगा जहाँ पर वे अपनी फसलों तथा पालतू जानवरों के झुंड़ों की देखभाल कर सके। परिणामस्वरूप कई गाँवों का निर्माण हुआ। इन गाँवों में कई झोपड़ियाँ होती थी।

3. प्रारंभिक मनुष्य धीरे-धीरे 'भोजक सग्राहक' से भोजन उत्पादक में बदल गया। उसने उन खाद्य अनाजों की कटाई की जो जंगलों के कुछ क्षेत्रों में उग गए थे। उसे कोई ज्ञान नहीं था कि अनाज को उगाया जा सकता है। सम्भवत: किसी दिन किसी ने देखा होगा कि अनाज का दाना छिटककर गीली मिट्टी में गिरा, अंकुरित हुआ।

कुछ समय पश्चात् ढेर सारे सुनहरे अन्न के रूप में विकसित हो गया। यह कृषि की शुरूआत थी, जिसने एक व्यवस्थित जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। मानव एक अन्न संग्रहकर्त्ता के स्थान पर अन्न उत्पादक बन गया।

4. पशुओं को पालतू बनाना, जैसे—कुत्ते, भेड़, बकरी, मवेशी, घोड़े, गधे आदि प्रारंभिक मानव के लिए निम्न प्रकार से सहायक सिद्ध हुए—
   (i) मवेशी दूध तथा मांस प्रदान करते थे।
   (ii) घोड़े, बैल, ऊँट तथा गधे जैसे—पशुओं का उपयोग भार ढोने के लिए किया जाता था।
   (iii) भेड़ तथा अन्य जानवरों ने उसे कपड़ों के लिए ऊन तथा खाल प्रदान की।
   (iv) गाय के गोबर से मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए खाद प्राप्त होती थी।
   (v) कुत्ते ने शिकार करने में सहायता प्रदान की।
5. नवपाषाण कालीन मनुष्य पृथ्वी, जल अग्नि और सूर्य, वर्षा तथा बवंडर (मेघ-गर्जना) जैसे प्राकृतिक तत्त्वों की पूजा करता था। वे उपयोगिता के आधार पर गाय की पूजा तथा डर के कारण सांप की पूजा करते थे।
   मृतकों को दफनाया तथा कब्रों को पत्थरों के विशाल आयताकार खण्डों से चिह्नित किया गया जिन्हें महापाषाण कहा गया। कभी-कभी मृतकों को एक बड़े अस्थि कलश में उनकी प्रिय वस्तुओं के साथ दफनाया जाता था। ऐसी कब्रें 'डोल्मेन' कहलाती थीं। नव-पाषाणयुगीन मानव मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करता था।
6. मिट्टी के बर्तन बनाना आदिम मानव के लिए महान क्रांति थी। जिसे निम्नलिखित उदाहरणों के द्वारा उल्लेखित किया जा सकता है—मनुष्य को भोजन को पकाने तथा इकट्ठा करने के लिए बर्तनों की आवश्यकता होती थी। कुम्हार के चाक ने विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन निर्माण की कला विकसित की। इन बर्तनों का उपयोग खाद्यान, दूध और पानी के भंडारण के लिए किया जा सकता था। इस प्रकार मिट्टी के बर्तन बनाना एक महान क्रांति थी।

❑

4. हड़प्पा सभ्यता : नगरीयता का उद्भव

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) हाथी का 2. (c) हड़प्पा 3. (c) अन्न-कोठार
4. (c) मेसोपोटामिया में

(ख) 1. दक्षिण भारत, मध्य एशिया तथा पश्चिमी देशों 2. शहरी
3. मॉण्टमुगरी 4. शिव 5. पाकिस्तान

(ग) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii)

(घ) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(ङ) 1. हड़प्पा सभ्यता का उदय पश्चिम पंजाब (अब पाकिस्तान) में रावी नदी के तट पर मॉण्टगुमरी जिले में हुई।

2. हड़प्पा सभ्यता की कुछ महत्त्वपूर्ण इमारतों में विशाल स्नानागार अन्न भण्डार तथा सभागार थे।

3. सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि यह सिंधु घाटी में अवस्थित है।

4. सिंधु घाटी सभ्यता के पाँच शहर हैं—हड़प्पा, मोहनजोदारो, रोपड़ कालीबंगा तथा लोथल।

5. हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों के शहरों की खुदाई पुरातात्वीद राय बहादुर दयाराम साहनी व उनकी टीम ने की थी।

(च) 1. सिंधु घाटी के लोगों के पास नगर नियोजन में उल्लेखनीय कौशल था—

(i) गढ़ी

(ii) निचला नगर

गढ़ी शहर का उठा हुआ हिस्सा था तथा एक किले जैसा दिखता था। यह विशाल और ऊँची दीवारों से घिरा हुआ होता था। इसके नीचे निचला शहर था जो चौड़ी सड़कों और गलियों द्वारा आयताकार ब्लॉकों में विभाजित था जो समकोण बनाते हुए जाल-सा बनाती थीं।

2. मोहनजोदारो की जल-निकवास व्यवस्था बहुत ही विस्तृत है। लोग सफाई का बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने जल निकासी की भूमिगत व्यवस्था की थी। घर की खुली नालियाँ ईंटों से चिने गए भूमिगत मुख्य नाले में गिरती थीं। गंदे पानी को अच्छी तरह से ढकी हुई गली की नालियों के माध्यम से छोड़ा जाता था। समय-समय पर सफाई के लिए मुख्य नालों में नियमित अंतराल पर मैनहोल की व्यवस्था की गई थी।

3. सिंधु घाटी के लोगों के मुख्य व्यवसाय थे—

(i) कृषि—सिंधु घाटी के लोग बाढ़ के पानी से अपनी भूमि की सिंचाई करते थे। वे गेहूँ, जौ, सरसों, तिल, कपास, बाजरा, सब्जियाँ आदि उगाते थे।

(ii) उत्पादन—मिट्टी के बर्तन बनाना, लोहे के औजार बनाना, काटना तथा बुनना अन्य व्यवसाय थे। वे धातु, शंख, हड्डी आदि के आभूषण बनाते थे।

(iii) व्यापार तथा वाणिज्य—आंतरिक तथा बाह्य व्यापार भी एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। व्यापार की मुख्य वस्तुएँ टिन, ताँबा, सोना, लकड़ी, चाँदी तथा कीमती पत्थर थे। साधारणत: सामान को बैलगाड़ी तथा नाव की सहायता से ले जाया तथा लाया जाता था। सिंधु घाटी के लोगों के दक्षिणी भारत, मध्य एशिया तथा कुछ अन्य पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध थे। उन्होंने ब्लूचिस्तान, फारस, सुमेरिया (मेसोपोटामिया) के साथ भी व्यापार किया।

4. विभिन्न संघों, व्यापारियों तथा सौदागर द्वारा मुद्रांकन प्रयोजनों के लिए मुहरों का उपयोग किया जाता था। वे हमें सिन्धु घाटी के लोगों के संबंध लिपि, कलात्मक कौशल, धार्मिक विश्वासों, पोशाकों, गहनों, व्यापारिक संपर्कों वाणिज्यिक के बारे में जानकारी देते थे।
5. सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के सटीक कारण तो पता नहीं चलसके हैं लेकिन कुछ इतिहासकारों के अनुसार इसके संभावित कारण निम्नलिखित हैं—
   (i) वह भयंकर व नियमित बाढ़ों से नष्ट हो गई हो।
   (ii) किसी महामारी ने यहाँ की जनसंख्या का सर्वनाश कर दिया हो।
   (iii) वनोन्मूलन के कारण जलवायु बदलने लगी और यह क्षेत्र मरुस्थल जैसे शुष्क हो गया।
   (iv) क्षेत्र में आए भूकंपों ने समस्त सभ्यता का सर्वनाश कर दिया।
   (v) आर्यों ने नगरों पर आक्रमण करके उनका सर्वनाश कर दिया। यह सिद्धान्त इस तथ्य से समर्थित है कि हड़प्पा की किलेबंदी को आर्यों द्वारा लगातार आक्रमणों से बचाने के लिए दृढ़ किया गया होगा।
6. सिन्धु घाटी की सभ्यता एक उन्नत सभ्यता थी जहाँ लोग विलासितापूर्ण नगरीय जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने भूमिगत जल निकास प्रणाली की व्यवस्था थी। उन्होंने भव्य सार्वजनिक भवनों, पूजा स्थलों, अन्न-भंडारों आदि का निर्माण किया।

❑

5. वेदों का युग

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) ज्ञान 2. (d) आर्य 3. (c) प्राकृतिक शक्तियों की
4. (b) पूर्व वैदिक युग में 5. (b) सप्त सिन्धु प्रदेश को

(ख) 1. कर्मों 2. राजस्थान 3. ऋग्वेद
4. सप्तसिन्धु 5. 3 × 7 फीट होता

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. आर्य ईसा पूर्व तीसरी या दूसरी सहस्त्राब्दी में भारत आए।
2. प्रारंभिक आर्यों के धार्मिक साहित्य को वैदिक साहित्य कहा जाता है। इसमें वेद, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद शामिल हैं।
3. उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थित वैदिक साम्राज्य कुरू, पंचाल, कौशल, काशी (उत्तर प्रदेश), मगध, अंग और विदेह (बिहार) थे।
4. प्रारंभिक आर्यों के पसंदीदा मनोरंजन-संगीत, नृत्य, शिकार, घुड़दौड़ और रथदौड़ तथा जुआ थे।

(च) 1. आर्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के विभिन्न स्रोत हैं—

(i) वेद—वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्वेद।

(ii) ब्राह्मण—ये वैदिक मन्त्रों की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ हैं। ये सरल गद्य में लिखी हुई है जिन्हें साधारण व्यक्ति भी समझ सकते हैं।

(iii) आरण्यक—इनकी रचना वनों में की गई। ये जीवन तथा सृष्टि के दर्शन की व्याख्या करते हैं।

(iv) उपनिषद्—ये ब्राह्मणों के अन्तिम भाग तथा भारतीय दर्शन के स्रोत हैं।

2. आर्यों के समाज की मूल ईकाई पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार थी। कुल या परिवार का मुखिया सबसे वयोवृद्ध पुरुष होता था, जिसे कुलप कहते थे। समाज में स्त्रियों का सम्मानजनक स्थान होता था। वे 'स्वयंवर' द्वारा अपने पति का चयन करती थीं। ब्राह्मण अथवा पुरोहित धार्मिक अनुष्ठान करते थे। क्षत्रिय अथवा योद्धा कबीले की रक्षा करते थे। कृषक तथा शिल्पी वैश्य वर्ग में आते थे। दास शूद्र कहलाते थे।

3. आश्रम व्यवस्था के अनुसार मनुष्य का औसत जीवन 100 वर्षों का माना जाता था। इसे 25-25 वर्ष के चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास में बाँटा गया था।

4. आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे बैलों की जोड़ी तथा हल से खेत जोतते थे तथा खेत की सिंचाई करते थे। लोग अभी भी देहाती अवस्था में थे और इसीलिए गाय तथा बैल उनकी मुख्य सम्पत्ति थी। गाय पालन पर अधिक ध्यान दिया जाता था।

अन्य व्यवसायों में प्रथम व्यवसाय बुनाई था, जो लोगों को वस्त्र और पोशाक प्रदान करता था। बाद में कढ़ाई तथा रंगाई करते थे। बाद में घर बनाना, घरेलू बर्तनों, लकड़ी का सामान, रथों, गाड़ियों, नावों और जहाजों के निर्माण के लिए बढ़ई का काम होता था। लौहार, सुनार, चमड़े का काम, चिकित्सा तथा पुजारी आदि अन्य व्यवसाय थे। व्यापार तथा सामुद्रिक गतिविधियाँ भी उल्लेखनीय थी। खुले सागरों में नौ-संचालन होता था। बेबीलोन तथा पश्चिमी एशिया के अन्य देशों के साथ वाणिज्यिक आदान-प्रदान होता था।

कीजिए और सीखिए

(छ) 1. RIGVEDA 2. SURA 3. ARYANS 4. NISHKA 5. HORSE

❑

6. प्रारम्भिक राज्य

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) जनपद 2. (c) 16 महाजनपद 3. (d) कपिलवस्तु 4. (d) मगध

(ख) 1. महापद्मनन्द 2. वैशाली 3. कुशीनगर तथा पावा
4. मगध 5. भृगुकच्छ

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (i)

(ङ) 1. बौद्ध तथा जैन साहित्य उत्तरवैदिक काल की जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त पुरातात्विक स्रोतों से पाटलिपुत्र, काशी आदि प्राचीन स्थलों पर किए गए उत्पन्न से हमें इस युग के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं।

2. आर्य कबीलों की पहचान सत्ताधारी कबीलों के समूहों से होने लगी थी जिन्हें जनपद कहते थे। जैसे—काम्बोज तथा कुरू।

3. दो महाजनपद थे—(i) काशी (ii) पांचाल।

4. मगध का प्रथम महत्त्वपूर्ण (प्रतापी) राजा बिम्बिसार था जिसका सम्बन्ध हर्यंक वंश से था।

5. नन्द वंश का सबसे प्रतापी राजा महापद्मनन्द था।

(च) 1. राजतंत्र तथा गणतन्त्र के बीच निम्नलिखित अन्तर हैं—

(i) राजतंत्र में प्राय: एक निरंकुश शासक होता था जबकि गणराज्यों में लोकतन्त्र के द्वारा स्थापना होती थी।

(ii) राजतंत्र राजपद वंशानुगत होता था जबकि गणतंत्र में राज्य के मुखिया को लोगों के द्वारा चुना जाता था।

(iii) राजतंत्र में राजा द्वारा कानून बनाए जाते थे जबकि गणतंत्र में सभा तथा परिषद् द्वारा कानून बनाए जाते थे।

(iv) राजतंत्र में राजा अपने निजी उद्देश्यों के लिए अपने अधिकार और संसाधनों का उपयोग कर सकता था। लेकिन गणतंत्र में लोगों के कल्याण के लिए सत्ता का प्रयोग होता था।

(v) एक गणतन्त्र में जनता जब चाहे अपना शासक बदल सकती है परन्तु राजतंत्र में जनता के पास ऐसा अधिकार नहीं होता है।

2. महाजनपद काल में समाज चार मुख्य वर्गों में विभाजित था—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। जाति सम्बन्धी नियम बहुत कठोर होते थे जिसका कठोरता से पालन किया जाता था। एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों से वैवाहिक सम्बन्ध नहीं रख सकते थे। समाज में बहुविवाह प्रचलन था। चार मुख्य जातियों के अलावा कई अन्य जातियाँ भी उभर रही थीं। तत्कालीन समाज में शिल्पकारों तथा व्यापारियों संघ होते थे, जिन्हें 'श्रेणी' कहा जाता था। वे बहुत अमीर होते थे तथा उनके पास राजनीति शक्तियाँ होती थीं। समाज में ब्राह्मणों को ऊँचा स्थान प्राप्त था। स्त्रियों को वैदिक युग जैसा सम्मान नहीं मिलता था। उन्हें सम्पत्ति का अधिकार नहीं था। पुत्री के जन्म को अभिशाप माना जाता था। विधवा विवाह अपवाद स्वरूप होते थे। छूआछूत प्रचलित थी।

3. मगध साम्राज्य के उत्थान के कई कारण थे—

(i) महत्त्वाकांशी शासक—बिम्बिसार, अजातशत्रु तथा महापद्मनन्द सभी शासक महत्त्वाकांशी थे, जिन्होंने साम्राज्य विस्तार के लिए सभी साधनों को अपनाया। उन्होंने पड़ोसी राज्यों को वैवाहिक सम्बन्धों तथा विजय द्वारा अपने राज्य में मिला दिया।

(ii) उर्वर और समृद्ध भूमि—उर्वर गंगा का मैदान कृषि के लिए समृद्ध था। इस समृद्धि ने मगध राज्य को एक मजबूत अर्थव्यवस्था प्रदान की।

(iii) समृद्ध प्राकृतिक संसाधन—मगध के पास विशाल लौह भण्डार मौजूद थे, जिन्होंने उद्योगों तथा सामरिक अस्त्र-शस्त्रों के लिए विशेष योगदान दिया।

(iv) राजधानी नगरों की सामरिक स्थिति—मगध की पुरानी राजधानी राजगृह पाँच पहाड़ियों से घिरी होने के कारण दुर्भेद्य थी। नई राजधानी पाटलिपुत्र एक 'जल-दुर्ग' थी जो गंगा गण्डक तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित थी। इसकी सामरिक स्थिति ने व्यापार की प्रगति में बहुत योगदान दिया।

(v) व्यापार विकास—मगध शासकों ने व्यापार में बहुत लाभ कमाया। सड़कों तथा नदियों ने परिवहन की सुविधाएँ प्रदान कर व्यापार के विकास में योगदान दिया।

4. जैसे-जैसे गाँवों में जनसंख्या बढ़ी, वे व्यापार के बड़े और महत्त्वपूर्ण केंद्र बन जाए। इस प्रकार बड़े गाँव शहरों में बदल गए व्यापारियों और कारोबारियों ने भी कस्बों और शहरों के विकास में मदद की।

5. व्यापार में वस्तु-विनिमय की अपेक्षा मुद्रा का प्रयोग अधिक अच्छा है क्योंकि दूर के स्थानों पर वस्तुओं को ले जाना कठिन है जबकि पैसों को आसानी से ले जाया जा सकता है।

❑

7. नए विचारों का विकास

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) बिहार में 2. (d) नन्द 3. (d) नालन्दा पर
4. (d) कुण्डग्राम में 5. (c) प्राकृत में

(ख) 1. त्रिपिटक 2. हीनयान, महायान 3. 24वें
4. शाक्य 5. 24वें

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. उपनिषद् का साधारण अर्थ गुरू के समीप (चरणों में) बैठना है। 108 उपनिषद् ज्ञात है जो हिन्दू शिक्षकों के ज्ञान का संकलन हैं। वे ईश्वर तथा आत्मा को महत्त्व देने पर जोर देते हैं।

2. वर्धमान महावीर जैन धर्म के 24वें तथा अन्तिम तीर्थंकर थे।
3. गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे।
4. बौद्ध धर्म के दो सम्प्रदाय महायान तथा हीनयान हैं।
5. बौद्ध धर्म भारत के अलावा श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस, नेपाल, भूटान, मंगोलिया, चीन और जापान में फैला है।

(च) 1. जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के प्रसार के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं—
(i) वैदिक धर्म की सरल विधियाँ जटिल तथा खर्चीली हो गई थी।
(ii) ब्राह्मण जो शास्त्रोक्त विधि-विधान सम्पन्न कराते थे, अपने धन और शक्ति के स्वार्थ के लिए साधारण जनता का शोषण करने लगे।
(iii) वैदिक ग्रंथों की भाषा संस्कृत साधारण लोगों के लिए अब ग्राह्य नहीं रह गई थी।
(iv) सरल वर्ण-व्यवस्था ने कठोर जाति-व्यवस्था का रूप धारण कर लिया था। उच्च जाति के लोग निम्न जातियों के लोगों से घृणा करते थे और उन्हें अछूत कहते थे।
(v) वैश्य प्रमुख व्यापारिक जाति थी, जिसने पर्याप्त धन एकत्रित कर लिया था, फिर भी उन्हें समाज में निम्न स्तर ही प्राप्त था।
(vi) दो नए धर्मों बौद्ध तथा जैन प्रेम, दया, धर्मनिष्ठता के सहज मार्ग पर आधारित थे।

2. जैन धर्म के मुख्य उपदेश निम्नलिखित हैं—
(i) अहिंसा—जैन धर्म का सबसे पहला महान उपदेश है अहिंसा (शांति) जैन धर्म में विश्वास है कि किसी भी जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए।
(ii) यज्ञों, बलिदानों और कर्मकांडों में अविश्वास—जैन धर्म किसी भी कर्मकाण्ड में विश्वास नहीं करते थे।
(iii) मोक्ष की प्राप्ति—जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति को सभी सांसारिक इच्छाओं से 'निर्वाण' मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए उसे 'त्रिरत्न' का पालन करना चाहिए—(i) उचित विश्वास (ii) उचित ज्ञान (iii) उचित आचरण।
(iv) कठोर तप—महावीर ने अपने अनुयाइयों को कठोर तप के माध्यम से अपनी इच्छाओं को लालसाओं को नियन्त्रित करने को कहा।
(v) कर्म और आत्मा के स्थानांतरगमन का सिद्धान्त—हिन्दू धर्म की तरह ही जैन धर्म भी परलोक तथा आत्मा के स्थानांतरगमन में विश्वास करता है। इसके अनुसार प्रत्येक, अपने पिछले जन्मों के कर्मों के आधार पर नया जीवन मिलता है।
(vi) मानव की समानता—जैन धर्म ने जातिवाद तथा जाति के आधार पर भेदभाव पर कड़ा प्रहार किया। यह समस्त जाति की समानता का पक्षधर है।

(vii) सामाजिक आचार संहिता—जैन धर्म के अनुसार मनुष्य की आत्मा शुद्ध हो सकती है जैसे—किसी को भी झूठ नहीं बोलना चाहिए, चोरी व हत्या नहीं करनी चाहिए तथा एक साधारण जीवन जीना चाहिए।

3. बौद्ध धर्म के मुख्य उपदेश निम्नलिखित हैं—

(i) चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग—बौद्ध धर्म के अनुसार चार अटल सत्य हैं—(a) जीवन में जन्म, मृत्यु, बिमारी, वृद्धावस्था सभी कष्टमय हैं।
(b) कष्टों का मूल कारण तृष्णा है।
(c) कष्टों से मुक्ति पाने के लिए तृष्णा को समाप्त कर देना चाहिए।
(d) तृष्णा की समाप्ति के लिए आठ प्रकार के उपाय करने चाहिए, ये आठ उपाय 'अष्टांगिक मार्ग' हैं—
(i) सम्यक दृष्टि (ii) सम्यक संकल्प (iii) सम्यक वाणी (iv) सम्यक शील (v) सम्यक आजीविका (vi) सम्यक व्यायाम (श्रम) (vii) सम्यक स्मृति तथा (viii) सम्यक समाधि।

(ii) अहिंसा—बुद्ध अहिंसा में विश्वास रखते थे। वे सभी जीवधारियों की पवित्रता में भी विश्वास रखते थे।

(iii) निर्वाण (मुक्ति)—मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति है।

(iv) कर्म सिद्धांत में विश्वास—बुद्ध का विश्वास था कि मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य प्राप्त होता है।

(v) कर्मकाण्डों में अविश्वास—बुद्ध को यज्ञ, बलि तथा कर्मकाण्डों में विश्वास नहीं था।

(vi) मानव-मात्र की समानता—वे सभी मनुष्यों की समानता में विश्वास करते थे। उन्होंने जाति-प्रथा की निंदा की।

4. बुद्ध ने मध्यम मार्ग सिखाया। उन्होंने ब्राह्मणों की अत्यधिक कर्मकाण्डों की निन्दा की तथा जैनियों की कठोर तपस्या को नापसंद किया। उन्होंने हिन्दु तथा जैन धर्म के चरम नजर अंदाज किया तथा मध्य मार्ग का पालन किया।

5. जाति व्यवस्था ने लोगों को उच्च तथा निम्न जातियों में विभाजित किया। उच्च जाति के लोग नीची जाति के लोगों को अछूत कहकर उनका तिरस्कार करते थे। उन्हें सार्वजनिक कुँओं से पानी भरने या मंदिरों में जाने की अनुमति नहीं थी।

❑

8. प्रथम साम्राज्य : मौर्य

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) चन्द्रगुप्त ने 2. (b) अर्थशास्त्र 3. (d) चन्द्रगुप्त ने 4. (b) जैन
5. (d) नन्द को

(ख) 1. बौद्ध 2. चन्द्रगुप्त मौर्य 3. चन्द्रगुप्त मौर्य 4. विद्वान
5. ब्राह्मी

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (iii)

(ङ) 1. मेगस्थनीज की 'इण्डिका' तथा कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' चन्द्रगुप्त के बारे में विश्वसनीय जानकारी के दो प्रमुख स्रोत हैं।
2. कौटिल्य (चाणक्य) चन्द्रगुप्त का मार्गदर्शक था।
3. मैगस्थनीज, यूनानी सेनापति सेल्यूकस का राजदूत था।
4. मौर्य साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त ने की थी।

(च) 1. मौर्य प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
(i) वह प्रधान सेनापति तथा प्रधान न्यायाधीश भी होता था। वह कुशल और वफादार मंत्रियों की नियुक्ति अपनी सभा में करता था जिसे मंत्रि-परिषद् कहते थे। प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का जिम्मेदार होता था।
(ii) पूरा साम्राज्य चार प्रान्तों में विभाजित था—
(a) मगध (b) तक्षशिला (c) उज्जैन (d) स्वर्णगिरि।
प्रत्येक प्रान्त का राज्यपाल 'कुमार' कहलाता था, जो राजकुमार अथवा शाही परिवार से सम्बद्ध होता था। छोटे राज्यों का अधिकारी राजुक होता था। जिला प्रशासन को 'स्थानिक' के द्वारा देखा जाता था तथा जिले में अनेक गाँव होते थे जिसका मुखिया 'ग्रामिक' या 'ग्रामिणी' होता था।
(iii) पाटलिपुत्र तथा कौशाम्बी, उज्जैन, तक्षशिला जैसे अन्य नगर भी इसी प्रकार प्रशासनिक होते थे। नगर चार भागों में विभाजित होता था तथा प्रत्येक का एक अधिकारी होता था। नगर प्रशासन का मुख्य अधिकारी 'नागरिक' कहलाता था। प्रशासन छः बोर्डों के द्वारा चलाया जाता था। प्रत्येक बोर्ड एक निश्चित विभाग को देखता था, जैसे—
(a) उद्योग, (b) विदेश, (c) जन्म एवं मृत्यु दर रिकॉर्ड, (d) सफाई (e) वजन तथा नाप-तौल, (f) सार्वजनिक सुविधाएँ।

2. मौर्यकाल में मूर्तिकला तथा वास्तुकला में पत्थरों का प्रयोग किया गया था। कारीगर कलाकृतियों को पॉलिश से चमकाते थे। उस समय के पत्थरों के स्तम्भ, स्तूप तथा विहार भी कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।
(i) ठोस पत्थर से निर्मित स्तम्भ—ये लगभग 20-30 मीटर ऊँचे होते थे। इन स्तम्भों के शीर्ष पर पशुओं की सुन्दर आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं जिसे शीर्ष स्तम्भ कहते हैं। वाराणसी के निकट सारनाथ में प्राप्त घंटी के आकार के एक स्तम्भ के शीर्ष पर चार सिंह बने हुए हैं।
(ii) स्तूप—अशोक ने बड़ी संख्या में स्तूपों का निर्माण कराया। ये अर्द्ध-गोलाकार, गुम्बदाकार स्मारक हैं जो बुद्ध के अवशेषों को रखने के लिए बने थे। ये मिट्टी तथा ईंटों से निर्मित होते थे। पार्श्व की चारदिवारी तथा शीर्ष पर छतरी पत्थरों से निर्मित होती थी।

(iii) यक्षिणी की मूर्ति—यह पटना के दीदारगंज से मिली थी। यह एक दुर्लभ सुन्दरता और भव्यता की मूर्ति है।

3. प्राकृत भाषा में धम्म का अर्थ धर्म होता है। यद्यपि वह स्वयं बौद्ध था। अशोक ने मानव कर्त्तव्य की केवल अच्छी बातों का प्रचार किया। उसकी शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं—लोगों को धर्म से हटाकर प्रेम तथा शांति से रहना चाहिए। उन्हें हिंसा को छोड़कर अहिंसा को अपनाना चाहिए। यदि अपने बड़ों को उनका सम्मान दिया जाए तो एक सच्चे व कर्त्तव्यनिष्ठ समाज का निर्माण हो सकता है। मालिकों को अपने दासों व नौकरों के साथ दया का व्यवहार रखना चाहिए। लोगों को एक-दूसरे के प्रति संयमी होना चाहिए। लोगों को धर्म या जाति के आधार पर किसी के प्रति दुर्भाव व भेदभाव नहीं रखना चाहिए। ब्राह्मण तथा श्रमण से एक जैसा ही व्यवहार करना चाहिए। लोगों को सादा, स्वच्छ जीवन जीना चाहिए तथा जरूरतमंदों को दान देना चाहिए। उसने सड़क किनारे छायादार व फलदार वृक्ष लगाने, विश्राम स्थल बनाने तथा कुएँ खुदवाने के आदेश दिए तथा लोगों के जीवन को सुविधाजनक बनाया।
4. 232 ई०पू० में अशोक की मृत्यु के पचास वर्ष के भीतर ही मौर्य साम्राज्य समाप्त हो गया। बौद्ध नीतियों से ब्राह्मणों में रोष फैल गया तथा उन्होंने विद्रोह कर दिया। अशोक की अहिंसक नीतियों से सेना कमजोर पड़ गई। वह उत्तर-पश्चिम से हुए हमलों का सामना नहीं कर सकी। कमजोर अर्थव्यवस्था ने भी साम्राज्य को कमजोर कर दिया। अशोक के कमजोर उत्तराधिकारी शासक उसके विशाल साम्राज्य को बचा नहीं सके।
5. कलिंग का युद्ध अशोक के जीवन में एक बहुत बड़ा मोड़ लेकर आया क्योंकि युद्ध में भयंकर विनाश तथा रक्तपात को देखकर अशोक का हृदय पश्चाताप से भर गया। यह युद्ध अशोक के जीवन में एक मोड़ लाया। उसने भविष्य में हिंसा एवं युद्ध न करने का निर्णय लिया तथा 'धर्म विजय' की नीति अपनायी। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया और बुद्ध का सन्देश फैलाने के लिए उसने दूर-दूर तक धर्म प्रचारक भेजे।

❑

9. नगरों एवं ग्रामों में जीवन (600 ई०पू० से 300 ई०)

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) मुरुगन 2. (b) पाण्ड्य की 3. (c) तमिल भाषा में

(ख) 1. सेन्ट थोमस 2. उरैयुर, कावेरीपत्तनम या पुहार
3. सभा 4. कावेरी

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (ii) 3. (iii) 4. (i)

(ङ) 1. भारत में प्रारम्भिक शहरीकरण की जानकारी के स्रोत साहित्यिक ग्रंथ हैं जैसे—धर्मशास्त्र तथा धर्मसूत्र, पाणिनी की अष्टाध्यायी, जैन तथा बौद्ध ग्रंथ, कौटिल्य की अर्थशास्त्र, महाकाव्य—वेद व्यास मुनि की महाभारत तथा वाल्मीकि की रामायण, मनुस्मृति तथा पुराण आदि।

2. दक्षिण भारत में पाण्ड्य, चोल तथा चेर साम्राज्यों का उदय हुआ।

3. कारीकल (190 ई० के लगभग) सबसे प्रसिद्ध चोल शासक था।

4. वाराणसी, पटना तथा मदुरै तीन प्राचीन शहर हैं जो आज भी हैं।

(च) 1. प्राचीन काल में नगरों की आठ महत्त्वपूर्ण श्रेणियाँ थी—

(i) राजधानीय नगर (ii) स्थानीय नगर (राजधानी जनपद) (iii) खारवेत (लगभग 200 गाँवों का एक मुख्य बिन्दु) (iv) खेता नगर (खारवेत से छोटा नगर) (v) पूताभेदना (एक बड़ा व्यावसायिक केन्द्र) (vi) निगम (साधारण बाजार केन्द्र) (vii) पत्तन (तटीय व्यापारिक शहर) और (viii) द्रोणामुख (नदी किनारे बन्दरगाह)। इनके अलावा खण्डवारा (सैन्य-कैम्प) तथा 'निवेश' (कैम्प बस्ती) भी होते थे जो अस्थाई प्रकार के नगर थे।

इन वर्गों के नगरों के अतिरिक्त धार्मिक एवं शैक्षिक नगर भी होते थे। तक्षशिला एवं नालन्दा मौर्योत्तर काल के प्रमुख शैक्षिक नगर थे।

2. भारत में शहरों के विकास के कारण थे—

(i) आर्थिक कारक—आर्य लोग मूलत: लौह युग के लोग थे। लोहे का प्रयोग हल, कुल्हाड़ी, आरी तथा कृषि उपकरण बनाने में किया जाता था। इन उपकरणों से गंगा के मैदान के घने जंगलों को काटकर कृषि के लिए भूमि साफ करना सम्भव हुआ। लोहे के प्रयोग से भूमि से अधिक उत्पादन सम्भव हुआ जिसने शहरों के उदय में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त लोहे का प्रयोग युद्ध के लिए घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों तथा कृषि के लिए बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों के निर्माण में होता था। इससे लोगों की गतिशीलता में वृद्धि हुई तथा व्यापार एवं वाणिज्य का विकास हुआ जिससे नगरीकरण सम्भव हुआ।

(ii) राजनीतिक कारक—इस समय तक गंगा का निचला मैदान पूर्णत: बस गया था तथा यह आबादी का केन्द्र करू-पांचाल से हटकर बिहार के मगध प्रदेश में स्थापित हो गया। 600 ई०पू० के आसपास छोटे जनपदों का स्थान महाजनपदों ने ले लिया। जनपदों और साम्राज्य की स्थापना ने नगरीकरण को प्रोत्साहित किया। नगरों की संख्या, आकार संरचना तथा प्रकार्यों में वृद्धि हुई।

3. प्राचीन काल की दक्षिण भारत में नगरीकरण की मुख्य विशेषताएँ हैं—

(i) भारत के दक्षिणी छोर पर तमिलनाडु एवं केरल राज्यों में नगरीकरण की स्वतन्त्र प्रक्रिया हुई, जिससे विशिष्ट द्रविड़ संस्कृति का विकास हुआ।

(ii) तमिल देश ने पाँचवीं शताब्दी ई०पू० से लेकर आज तक शहरी परम्पराओं में उल्लेखनीय निरन्तरता दिखाई है। उरैयुर, पुहार तथा कोरकाई जैसे कुछ शुरुआती शहरी केन्द्र आज खंडहर बन गए हैं, मदुरै और कांचीपुरम जैसे अन्य सभी भी मौजूद हैं।

(iii) दक्षिण के नगरों का अरबों के साथ, रोमवासियों तथा यूनानियों के साथ उन्नत व्यापार रहा। तमिल लोगों के सुमेरिया (मेसोपोटामिया) से व्यापारिक सम्बन्ध थे। मदुरै, वज्जी, उरैयुर, पुहार तथा कोरकाई प्रमुख तमिल नगर थे, जो पाण्डयों, चोलों तथा चेरों के प्रारम्भिक तमिल राज्यों की राजधानी थे।

4. कारीकल (190 ई० के लगभग) सबसे प्रसिद्ध चोल शासक था। उसने पड़ोसी चेर तथा पाण्ड्य शासकों पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके पास एक विशाल जहाजी बेड़ा था। अपनी नौसैनिक शक्ति के बल पर उसने कुछ समय के लिए सिंहल द्वीप (आधुनिक श्रीलंका) के उत्तरी भाग पर भी अधिकार कर लिया था। बाद में उसने अपनी राजधानी उरैयुर से स्थानान्तरित करके कावेरीपत्तनम या पुहार में स्थापित की। यह व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। कारीकल ने कावेरी नदी से नहरें निकाली और सिंचाई पर विशेष ध्यान दिया। इसने कावेरी के किनारे 165 किमी लम्बे तटबन्ध का निर्माण भी कराया था।

❑

10. दूरस्थ देशों से सम्पर्क

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) संगम 2. (d) अरिकामेडु 3. (a) म्यांमार

(ख) 1. विशाल भारत 2. बारोबुदूर 3. द्वारवती 4. सुमात्रा

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. श्रीलंका का प्राचीन नाम सिंहल था, म्यांमार का प्राचीन नाम सुवर्णभूमि, जावा (इंडोनेशिया में मुख्य द्वीपों में से एक) को यवद्वीप कहा जाता था, सुमात्रा को स्वर्णद्वीप के नाम से जाना जाता था, कंबोडिया को कम्बोज के नाम से जाना जाता था, वियतनाम को चम्पा तथा थाईलैंण्ड को स्याम के नाम से जाना जाता था।

2. बौद्ध धर्म भारत से श्रीलंका, चीन, म्यांमार, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया में फैला। बौद्ध धर्म के प्रचारक विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए गए।

3. प्राचीन समय में, जावा, सुमात्रा तथा कंबोडिया भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे।

4. चंद्रगुप्त मौर्य तथा अशोक ग्रीक के साथ राजनयिक संबंध रखने वाले दो मौर्य शासक थे।

(च) 1. निम्नलिखित कारक भारत तथा विदेशों के बीच सम्पर्क रखने के उत्तरदायी हैं—

(i) व्यापारिक संबंध—भारत के पूर्व में चीन के साथ तथा पश्चिम रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध थे। कावेरी नदी का मुहाना रोमन उपनिवेश था। पूर्वी यूरोप में कॉस्टेण्टिनोपल के उदय के साथ ही भारतीय रोमन व्यापार का नया युग ईसा की चौथी शताब्दी में प्रारम्भ हुआ।

(ii) अरबों से सम्पर्क—सातवीं शताब्दी ई० में यूरोप तथा भारत के बीच भूमि तथा समुद्री रास्तों को अरब व्यापारियों द्वारा नियंत्रित कर लिया गया था।

(iii) हिंदू तथा बौद्ध धर्म का प्रचार—हिन्दू तथा बौद्ध धर्म भारत से दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों में फैल गया, जैसे—श्रीलंका, म्यामार, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, बाली, वियतनाम, स्याम आदि।

2. रोमन सिक्कों के व्यापक प्रयोग से ज्ञात होता है कि भारत के रोम से व्यापारिक सम्बन्ध थे। कावेरी के मुहाने पर एक रोमन बस्ती भी थी। रोमन सम्राट ऑगस्टस के शासन-काल में रोम के साथ व्यापार प्रारम्भ हुआ था जो ईसा की प्रथम शताब्दी में सम्राट नीरो की मृत्यु के साथ समाप्त हो गया। पूर्वी यूरोप में कॉस्टेण्टिनोपल के उदय के साथ ही भारतीय-रोमन व्यापार का नया युग ईसा की चौथी शताब्दी में प्रारम्भ हुआ। विदेशी जहाज कावेदी नदी तक आते थे तथा क्रैंगनूर (मुजीरी) पत्तन पर रुकते थे। तमिल देश मसालों, हाथी दाँत, लकड़ी, मोती तथा मूल्यवान पत्थरों विशेषत: बेराइल में बहुत समृद्ध था। रोम का सोना दक्षिण भारत में आने लगा। रोमन व्यापारियों ने दक्षिण भारत के बन्दरगाहों जैसे—कावेरीपट्टनम में बस्तियाँ बना रखी थीं।

3. भारत तथा दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने के लिए व्यापार तथा वाणिज्य का महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। प्राचीन काल से, भारत के पश्चिम तथा पूर्वी तटों पर बड़ी संख्या में प्राकृतिक बंदरगाह जैसे—सोपारा, कैम्बे, भड़ौच, ताम्रलिप्ति अरिकामेडु आदि व्यापार के केंद्र थे।

दक्षिण के चोल, चेर, पाण्डय तथा पल्लवों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया और श्रीलंका जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया तथा म्यांमार में अपने उपनिवेश स्थापित किए, इन सबको एक साथ वृहत्तर भारत के नाम से जाना जाता था।

4. धर्म ने भारत तथा विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाने में सहायता की। इसे निम्नलिखित तथ्यों द्वारा समझाया जा सकता है—

(i) मौर्यकाल में सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए श्रीलंका में भेजा था।

(ii) बहुत से बौद्ध तथा हिन्दू मन्दिरों का निर्माण म्यांमार में हुआ।

(iii) जावा के निवासी शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि हिन्दू देवताओं को पूजते थे तथा अनेक हिन्दू मन्दिरों का निर्माण भी किया था।

(iv) श्रीविजय राजाओं ने सुमात्रा में चौथी शताब्दी में एक हिन्दू राज्य की स्थापना की थी।

(v) कम्बोडिया में विष्णु मंदिर अंकोरवाट की दीवारों पर रामायण तथा महाभारत के चित्र उकेरे गए हैं।

(vi) प्राचीन काल में बाली एक हिन्दू बस्ती थी। यहाँ अनेक हिन्दू मन्दिर तथा बौद्ध मठ विद्यमान हैं।

(vii) वियतनाम में, 137 ई० में एक हिन्दू राजा श्रीमारा द्वारा एक हिन्दू राज्य स्थापित किया गया। यह संस्कृत शिक्षा का एक महान केन्द्र था।

(viii) दूसरी शताब्दी के आसपास स्याम (आधुनिक थाईलैण्ड) में हिन्दू संस्कृति फैली।

इन सभी तथ्यों से पता चलता है कि हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म ने भारत तथा विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक संपर्क बनाए रखने में सहायता की।

❑

11. सुदूर देशों से आए विजेता एवं मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का प्रसार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) रुद्रदमन ने 2. (d) साइरस 3. (c) बामियान में

(ख) 1. रूद्रदमन, महाक्षत्रप 2. मिनाण्डर, डेमेट्रियस 3. कनिष्क
4. मिलिन्द

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (i) 2. (v) 3. (ii) 4. (iii) 5. (iv)

(ङ) 1. इण्डो-ग्रीक या बैक्ट्रियन-ग्रीक उन यूनानी सेनापतियों के वंशज थे, जो बैक्ट्रिया (बल्ख) तथा पार्थिया के शासक थे। यूनानी जिन्हें भारतीय साहित्य में 'यवन कहा गया है बहुत सुसंस्कृत लोग थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं समाज को खगोलविद्या, सिक्कों व मूर्तिकला में बहुत प्रभावित किया। यूनानी नाटकों ने भारतीय नाटकों को बहुत प्रभावित किया।

2. मिनाण्डर शक्तिशाली यूनानी शासक था, जिसने अपना शासन अफगानिस्तान से मथुरा तक फैलाया।

3. गान्धार कला शैली तथा मथुरा कला शैली कनिष्क के शासनकाल के दौरान फली-फूली।

4. दक्षिणी मार्ग के सहारे उल्लेखनीय भारतीय बस्तियाँ काशगर, यारकन्द, खेतान, मीरन आदि में स्थापित थी, इसी प्रकार उत्तरी मार्ग के सहारे पु-ल्यूकिया, कुची, येन-की (अग्निदेश) एवं तुरफान प्रमुख भारतीय बस्तियाँ थीं।

(च) 1. भारतीय संस्कृति पर यूनानी प्रभाव निम्नलिखित तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) सिक्के—भारतीयों ने सिक्के ढालने तथा उनको रंगने की कला यूनानियों से सीखी।

(ii) खगोलविद्या—भारतीय खगोलशास्त्रियों ने तारों के विषय में अपने ज्ञान की यूनानी विद्वानों से तुलना की तथा अपने ज्ञान का विस्तार कर भविष्य-कथन के लिए उसका उपयोग किया। उन्होंने यूनानी पंचांग को भी अपनाया।

(iii) औषधि—ईसा की प्रथम शताब्दी में यूनानी चिकित्सक तथा शल्य चिकित्सक बहुत विख्यात थे। भारत में चिकित्सा की यूनानी पद्धति आज भी प्रचलित है।

(iv) युद्ध कला—यूनानियों को युद्धकला में अत्यन्त दक्ष माना जाता था।

(v) कला एवं मूर्तिकला—गान्धार कला शैली भारतीय कला पर यूनानी प्रभाव का ही प्रतिफल थी। इसके विषय एवं विचार भारतीय थे, किन्तु भौतिक लक्षण यूनानी। इस काल की बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ यूनानी देवता के समान लगती थीं।

(vi) साहित्य—संस्कृत नाटकों पर यूनानी प्रभाव अधिक पड़ा था, जो एथेन्स के दरबार में खेले जाते थे।

2. कनिष्क की उपलब्धियाँ तथा योगदान निम्न प्रकार हैं—

(i) कनिष्क का साम्राज्य उत्तर में बैक्ट्रिया से लेकर दक्षिण में उज्जैन तक तथा पूर्व में बनारस से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक विस्तृत था।

(ii) कनिष्क एक योग्य प्रशासक था। उसने अपने विशाल साम्राज्य को विभिन्न राज्यों में विभक्त कर दिया, जो उसके विश्वस्त राज्यपालों (क्षत्रयों) द्वारा शासित थे। वे स्वतन्त्र सैन्य शक्ति रखते थे।

(iii) कनिष्क कला तथा साहित्य प्रेमी था। उसके दरबार में महान विद्वान, दार्शनिक, कवि, संगीतज्ञ और नाटककार थे।

(iv) कनिष्क एक महान निर्माता भी था। उसने अनेक बौद्ध मठों, विहारों, स्तूपों तथा अन्य कलाकृतियों का निर्माण करवाया। उसके कार्यकाल में गान्धार कला शैली बहुत उच्च स्तर की थी। उसने मथुरा कला शैली के विकास के लिए भी योगदान दिया।

3. **(i) गान्धार कला शैली**—गान्धार कला शैली का विकास भारतीय कला पर यूनानी प्रभाव से हुआ। इसका नाम इसके उभार के स्थान से लिया गया है। इस शैली में बुद्ध व बोधिसत्व की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं जो देखने में यूनानी देवताओं जैसी लगती थीं।

(ii) मथुरा कला शैली—यह शैली मथुरा में कनिष्क के राज में फूली-फली। यह शैली व आत्मा से पूर्णत: भारतीय है। इस शैली में बुद्ध व बोधिसत्व की

मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। कनिष्क की सिर-कटी मूर्ति इस शैली की उत्कृष्ट उदाहरण है।

(iii) दो शैलियों के बीच अन्तर—(a) मथुरा कला आत्मा व शैली में पूर्णत: भारतीय थी जबकि गान्धार कला आत्मा में भारतीय थी किन्तु शैली में यूनानी थी। (b) मथुरा शैली में बुद्ध को भारतीय साधुओं की भाँति नग्न सिर के साथ दर्शाया गया है जबकि गान्धार शैली में बुद्ध को यूनानी देवताओं की तरह घुंघराले बालों में दिखाया गया है।

(iv) दो शैलियों के बीच समानताएँ—(a) दोनों शैलियों में बुद्ध व बोधिसत्व की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। (b) मूर्ति बनाने के लिए दोनों विद्यालय में लाल पत्थर का उपयोग किया गया। (c) दोनों शैलियाँ कुषाण राज में फली-फूली।

4. लघु अवधि में ही बौद्ध धर्म सम्पूर्ण भारत में फैल गया। अशोक तथा कनिष्क ने बौद्ध धर्म को राज्य धर्म घोषित किया। अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रसार किया। उसने सीरिया, मिस्र, मेक्डोनिया एवं अन्य देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए मिशनरियों को भेजा। उसने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को इसी उद्देश्य के लिए श्रीलंका भेजा। स्वयं अशोक ने 236 ई०पू० में मध्य एशिया के 'खोतान' में जाकर अपने 'धम्म' का प्रसार किया।

(i) कनिष्क बौद्ध धर्म का कट्टर अनुयायी था। उसके शासनकाल में उसके द्वारा किये गए प्रयासों के माध्यम से बौद्ध धर्म को मध्य तथा पूर्वी एशिया में पहचान मिली।

(ii) गुप्त काल में बौद्ध धर्म फलता-फूलता रहा। 5वीं शताब्दी में ई०पू० में कश्मीर, गान्धार, अफगानिस्तान बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय के गड़ रहे।

(iii) 372 ई०पू० में बौद्ध धर्म को एक चीनी भिक्षु द्वारा कोरिया में पहुँचाया गया, जहाँ से 552 ई० में यह जापान में पहुँचा। इंडो-चीन में, बौद्ध धर्म ईसा की तीसरी शताब्दी से पहले तथा तिब्बत में 640 ई० से पहले ही अपना लिया गया था।

❑

12. राजनीतिक घटनाक्रम : गुप्त साम्राज्य (320-340 ई०)

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) श्रीगुप्त 2. (a) समुद्रगुप्त 3. (d) चन्द्रगुप्त द्वितीय के

(ख) 1. चन्द्रगुप्त द्वितीय 2. ताम्रलिप्ति 3. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
4. विष्णु तथा शिव

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. श्रीगुप्त गुप्त वंश का संस्थापक था।

2. समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है।

3. चन्द्रगुप्त द्वितीय को 'शकारि' के नाम से जाना जाता है।

4. नागोद राज्य में भूमरा में स्थित शिव मन्दिर, तिगवाँ में विष्णु मन्दिर, नचनाकुठार में पार्वती मन्दिर, देवगढ़ में दशावतार मन्दिर, सिरपुर में लक्ष्मण मन्दिर, उदयगिरि में विष्णु मन्दिर तथा भीतरगाँव के मन्दिर गुप्तकाल के प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

(च) 1. गुप्त शासकों का प्रशासन-तन्त्र कुशल था। सम्पूर्ण साम्राज्य अनेक भुक्ति (प्रान्तों) में बाँटा हुआ था। प्रान्तों को 'विषय' (जिलों) तथा पेठ (गाँवों) में बाँटा हुआ था। गुप्त प्रशासन तन्त्र विकेन्द्रित था। ग्रामीण प्रशासन तन्त्र, गाँवों के प्रशासन का मुखिया 'ग्रामिक' होता था, वही शहरी क्षेत्र एक परिषद् द्वारा शासित होते थे, जिसमें नगर निगम के प्रमुख तथा व्यापारियों के विभिन्न संघों के प्रतिनिधि शामिल होते थे। राजस्व प्रशासन के लिए, राजा के स्वामित्व वाली भूमि पर भागा और भोगा जैसे कर लगाए जाते थे। व्यापारियों, शिल्पकारों, खानों आदि पर भी कर लगाया जाता था।

2. गुप्त काल में कला तथा स्थापत्य कला (वास्तुकला) भी फली-फूली। मूर्तिकला के क्षेत्र में गुप्तों के अधीन हुई महान उन्नति ने प्रसिद्ध गांधार शैली को ढक लिया। सारनाथ में अनेक मूर्तियाँ एवं प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें बुद्ध के जीवन का चित्रण मिलता है। गुप्त काल में ही अनेक मन्दिरों का भी निर्माण किया गया। नागोद राज्य में भूमरा में स्थित शिव मन्दिर, तिगवाँ में विष्णु मन्दिर, नचनाकुठार में पार्वती मन्दिर, देवगढ़ में दशावतार मन्दिर, सिरपुर में लक्ष्मण मन्दिर, उदयगिरि में विष्णु मन्दिर तथा भीतरगाँव के मन्दिर गुप्तकाल के प्रसिद्ध मन्दिर हैं। उदयगिरि गुफा के मन्दिर तथा ब्रह्मणा गुफा के मन्दिर उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जबकि बुद्ध गुफा मन्दिर अजन्ता के पास औरंगाबाद तथा ग्वालियर के निकट बाग में स्थित हैं।

3. फाह्यान एक चीनी तीर्थयात्री तथा बौद्ध विद्वान थे। उन्होंने छः वर्षों तक (405-411 ई०) तक गुप्त साम्राज्य का भ्रमण किया। उन्होंने भारत में रहने के अपने अनुभवों का जीवंत वर्णन लिखा जो मुख्य रूप से मौर्य साम्राज्य का है। वह मगध और विशेष रूप से उसकी राजधानी पाटलीपुत्र शहर की समृद्धि से अत्यधिक प्रभावित हुआ। राजधानी में आलीशान महल तथा इमारतें थीं। यहाँ विभिन्न धर्मों तथा जातियों के लोगों के बीच बहुत एकता थी। गुप्त शासक बहुत परोपकारी तथा कुशल शासक थे इन्होंने बहुत से कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए। भिन्न-भिन्न रास्तों पर विश्राम गृह होते थे। सड़कों की अच्छे से मरम्मत होती थी। लोग कानून को मानने वाले तथा ईमानदार थे। इनमें अधिकतर साकाहारी होते थे। जानवरों की हत्या को निषेध करने वाले कानून थे। शासकों ने बौद्धों तथा ब्राह्मणों को उदारतापूर्वक अनुदान दिये।

4. निम्नलिखित कारणों से गुप्त काल को 'प्राचीन भारत का स्वर्ण युग' कहा जाता है।

(i) गुप्तों ने भारत में एक शक्तिशाली साम्राज्य खड़ा किया। समुद्रगुप्त का शासन प्रत्यक्ष रूप से बंगाल से दिल्ली तक फैला हुआ था, जबकि उसका अप्रत्यक्ष शासन पश्चिम में उत्तर-पश्चिम सीमा से पूर्व में असम तक तथा उत्तर-पूर्व में हिमालय से लेकर दक्षिण में कांची तक फैला हुआ था।

(ii) गुप्त प्रशासन में दक्ष थे। साम्राज्य भुक्तियों (प्रान्तो) में विभाजित था जिसे विषयों (जिलों) में विभाजित किया हुआ था तथा विषय पेठ (गाँवों) में विभाजित होते थे।

(iii) गुप्तकाल में कला तथा वास्तुकला का अत्यधिक विकास हुआ। उन्होंने सुन्दर चित्रकारी वाले बहुत से मंदिरों का निर्माण कराया।

(iv) गुप्त शासक विद्या के संरक्षक तथा महान विद्वान थे।

(v) खगोलशास्त्र, गणित, ज्योतिष, धातु विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई। शिक्षा व्यापक थी। नालन्दा, तक्षशिला, उज्जैन तथा विक्रमशिला प्रसिद्ध विश्वविद्यालय थे।

(vi) गुप्तों ने बहुत से कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए जैसे विभिन्न मार्गों के किनारे विश्राम गृह बनवाना, सड़कें बनवाना आदि।

(vii) लोग ईमानदार थे तथा कानून का पालन करते थे।

(viii) गुप्तकाल में, भारत का व्यापार चीन, श्रीलंका तथा दक्षिणपूर्व एशिया के कई देशों में फला-फूला।

❑

13. राजनीतिक घटनाक्रम : वर्धन का साम्राज्य

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) बाणभट्ट 2. (a) नालन्दा 3. (b) प्रभाकरवर्धन

(ख) 1. 606 ई०वी० 2. ह्वेनसांग 3. भारत 4. कन्नौज

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (v) 5. (i)

(ङ) 1. हर्षवर्धन वर्धन वंश का एक प्रसिद्ध शासक था। वह अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद 606 ई० में सिंहासन पर बैठा।

2. नालंदा (बिहार में) उच्च शिक्षा तथा बौद्ध शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।

3. हर्ष के शासनकाल में शिक्षा के चार प्रसिद्ध केंद्र नालंदा, तक्षशिला, उज्जैन तथा गया प्रमुख थे।

4. हर्ष ने बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय को अपनाया।

(च) 1. निम्नलिखित भौगोलिक लाभों के कारण हर्ष की राजधानी के रूप में कन्नौज थानेश्वर से अधिक लाभप्रद थी—

(i) कन्नौज की केन्द्रीय भौगोलिक स्थिति के कारण राज्य की बेहतर देखरेख तथा प्रशासन सम्भव था।

(ii) थानेश्वर के विपरीत यह उत्तर-पश्चिम के सीमावर्ती आक्रमणों से भी सुरक्षित था।

2. हर्ष एक न्यायप्रिय तथा परोपकारी शासक था। वह साम्राज्य की वस्तुओं को व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए नियमित रूप से दौरे किया करता था। प्रशासन में उसकी सहायता एक मंत्रिपरिषद् करती थी। उसने अपने साम्राज्य को कई प्रान्तों में विभाजित किया तथा उन्हें राज्यपालों के अधीन रखा जिन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी गई थी। गवर्नरों का 'जागीर' (भूमि) के रूप में वेतन दिया जाता था। उसके बदले वे राजा को जब भी आवश्यकता हो, सैन्य सहायता दिया करते थे। यह एक प्रकार का साम्यवाद था जैसा यूरोप में मध्यकाल में था।

हर्ष की दंड संहिता गुप्तों की अपेक्षा अधिक कठोर थी। कुछ अपराधों के लिए मृत्युदण्ड भी दिया जाता था। हर्ष के पास एक शक्तिशाली सेना थी, जिसमें पैदल, घुड़सवार, हाथी तथा नावें सम्मिलित थी।

3. प्रारम्भ में हर्ष शिव तथा सूर्य का उपासक था। बाद में उसने भी बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय को अपना लिया। उसने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए कई कदम उठाए—

(i) उसने महायान सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए बौद्ध भिक्षुओं की विशेष संगीति बुलाई।

(ii) वह प्रत्येक पाँच वर्ष में प्रयागराज में धार्मिक मेले का आयोजन करता था।

(iii) उसने 641 ई० में कन्नौज में पाँचवीं बौद्ध संगीति का आयोजन किया।

(iv) वह विश्वविद्यालय जहाँ दूसरे विषयों के साथ धर्म के बारे में भी सिखाया जाता था, उन्होंने उन्हें उदार वित्तीय अनुदान दिये।

4. प्राचीन भारत में नालंदा (बिहार) एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पूरे एशिया से यहाँ विद्यार्थी पढ़ने आते थे। अपने उत्कर्ष पर नालंदा विश्वविद्यालय में लगभग दस हजार विद्यार्थी तथा पन्द्रह सौ उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक थे। शीलभद्र विश्वविद्यालय के प्रधानाध्यापक थे। विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा, खाना तथा आवास का प्रबन्ध था। ह्वेनसांग ने भी पाँच वर्षों तक यहाँ शिक्षा प्राप्त की। बारहवीं शताब्दी तक यह शिक्षा का मुख्य प्रसिद्ध केन्द्र थी। इसे 1193 में बख्तियार खिलजी के मुस्लिम झुंडों ने इसे नष्ट कर दिया।

❑

14. राजनीतिक घटनाक्रम : चालुक्य एवं पल्लव

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) पुलकेशिन द्वितीय 2. (b) महाबलिपुरम 3. (d) नरसिंहवर्मन प्रथम

(ख) 1. छोटे अधिकारी 2. हर्षवर्धन, 620 ई० 3. पल्लवों
4. बप्पादेव

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (iii) 4. (ii)

(ङ) 1. चालुक्य वंश के संस्थापक पुलकेशिन प्रथम थे।
2. *पापनाथ* तथा *विरुपाक्ष* मंदिरों का निर्माण चालुक्यों ने करवाया था।
3. महाबलीपुरम् शहर की स्थापना नरसिंहवर्मन प्रथम ने की।
4. अलवार तथा नयनार भक्ति शाखा के सन्त थे। अलवार संत वैष्णव को मानते थे, जबकि नयनार सन्त शिव के उपासक थे। वे अपनी स्थानीय तमिल भाषा में प्रचार करते थे।

(च) 1. पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल के दौरान वातापी, ऐहोल और पट्टदकल (बीजापुर जिले में) में कई विष्णु तथा शिव मंदिरों का निर्माण किया गया था। इनमें विरुपाक्ष तथा पापनाथ मन्दिर सबसे प्रसिद्ध हैं।
वातापी में विष्णु का एक गुफा मन्दिर भी हाल ही में खोजा गया है। बड़ी संख्या में बौद्ध मठ भी स्थापित किए गए। ऐहोल को 'भारतीय मन्दिरों की स्थापत्य कला का पालना' कहा गया है। अजन्ता की गुफाओं के अधिकांश भित्तिचित्र भी। चालुक्यों के शासनकाल में ही बनाए गए। अजन्ता की गुफाओं के चित्र मे पुलकेशिन द्वितीय को ईरान के राजदूत की अगवानी करते हुए दिखाया गया है।
2. पल्लव शासक, विशेष रूप से नरसिंहवर्मन प्रथम कला तथा मूर्तिकला के महान संरक्षक थे। उन्होंने चेन्नई के निकट मामल्लपुरम (महाबलिपुरम) में शिलाओं तथा चट्टानों को काटकर बनाए गए भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया। इन्हें रथ मन्दिर कहा जाता है, क्योंकि ये रथ की आकृति में बनाए गए हैं। उसने त्रिची तथा पुटुकोट्टाई में गुफा मन्दिर भी बनवाए। काँचीपुरम में चट्टानों के मन्दिर भी बनाए गए थे। ये मन्दिर बहुत ऊँचे टावर के जैसे होते हैं, जिसे शिखर कहते हैं। काँची का कैलाशनाथ मन्दिर अपनी सुन्दर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। महाबलिपुरम का तट मन्दिर, काँची में मुक्तेश्वर तथा मांतगेश्वर के मन्दिर तथा गुडिमल्लम का परशुरामेश्वर मन्दिर भिन्न-भिन्न शैलियों में निर्मित हैं।
3. यद्यपि दक्षिण शासकों ने ब्राह्मणवाद का संरक्षण किया, तथापि कुछ सन्तों ने भक्ति पर बल दिया। अलवार सन्तों ने वैष्णववाद तथा नयनार सन्तों ने शैववाद पर बल

दिया। वे स्थानीय तमिल भाषा में प्रचार करते थे। ब्राह्मण पुरोहित संस्कृत में मन्त्रोच्चार करते थे, जो जन-साधारण की समझ से परे होता था। यही कारण था कि दक्षिण में भक्तिवाद खूब लोकप्रिय हुआ।

4. दक्षिण भारत के इतिहास में मन्दिरों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। चालुक्यों तथा पल्लवों ने बहुत से मन्दिरों का निर्माण कराया। मन्दिरों को शाही संरक्षण प्राप्त था। ये मन्दिर सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में कार्य करते थे। ब्राह्मण तथा पुजारी वैदिक शिक्षा प्रदान करते थे। मंदिरों में गाए जाने वाले धार्मिक भजनों को भक्ति संतों ने लोकप्रिय बना दिया था। नृत्य भी पूजा का एक अंग होता था। नृत्य की भरतनाट्यम शैली का उदय तथा विकास इन्हीं मन्दिरों में हुआ।

❑

15. प्राचीनकाल में संस्कृति और विज्ञान

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) वाल्मीकि ने 2. (a) हस्त्यायुर्वेद 3. (a) भारतीय
4. (c) नालन्दा 5. (a) 29

(ख) 1. नगर, द्रविड़ 2. सुश्रुत 3. ऐहोल, बादामी
4. अजन्ता गुफाएँ 5. वैज्ञानिक

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (v) 3. (i) 4. (iii) 5. (ii)

(ङ) 1. पुराण परम्पराओं, कथाओं, मिथकों, धर्ममतों, शास्त्र-विधियों, नैतिक संहिताओं, धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों के भण्डार हैं। वायु पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भागवत पुराण, स्कन्द पुराण आदि प्रसिद्ध पुराण हैं।

2. महाभारत कौरवों तथा पाण्डवों एवं पाण्डवों का विधि सम्मत राज्य जोकि कौरवों द्वारा हड़प लिया गया था, को वापस पाने के लिए कुरुक्षेत्र में लड़े गए महान युद्ध की कथा है।

3. रघुवंशम, कुमारसम्भव और अभिज्ञानशाकुंतलम, विक्रमोर्वशीयम और मेघदूतम कालिदास की महान कृतियाँ हैं।

4. चरक तथा सुश्रुत चिकित्सा क्षेत्र की दो महान हस्तियाँ थीं।

5. आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त विश्व के महान खगोलशास्त्री तथा गणितज्ञ थे।

(च) 1. स्तूप ईंट या पत्थर की चिनाई वाली ठोस गुम्बदाकार रचनाएँ हैं, जो बौद्ध तथा जैन लोगों ने किसी विशेष घटना की स्मृति से पवित्र स्थल या बुद्ध महावीर तथा अन्य धार्मिक सन्तों के अवशेष रखने के लिए बनाए। अशोक एक महान् स्तूप-निर्माता था, उसने 84,000 स्तूप बनवाए, जिसमें साँची का महान स्तूप भी सम्मिलित है। पत्थर के स्तम्भ अशोककालीन कला के सर्वोत्तम नमूने हैं। इनकी संख्या 30 से 40

है। लौरिया नन्दनगढ़ का स्तम्भ इसका एक उत्तम उदाहरण है। स्तंभ में दो भाग होते हैं—स्तंभ दण्ड और शीर्ष। स्तंभ दण्ड एक ही चट्टान से बना होता था, जबकि शीर्ष भी एक ही चट्टान से बना होता था, उस पर जंतुरूप खुदे होते थे। रामपुरवा तथा संकीसा के सिंह स्तंभ तथा गजस्तंभ इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

2. ब्राह्मण गुफाएँ विदिशा मध्य प्रदेश में उदयगिरि में भी पाई जाती हैं। इनमें से कुछ पहाड़ियों को काटकर बनाई गई हैं, अन्य पत्थरों द्वारा निर्मित हैं। कर्नाटक के बीजापुर जिले की बादामी गुफाएँ भी पहाड़ियों को तराशकर तथा संरचनात्मक रूप से बनाई गई हैं। उड़ीसा के उदयगिरि में राजा खारवेल के संरक्षण में जैन गुफा–मन्दिर बनाए गए, जो अपरिष्कृत हैं। जैन गुफाओं के उत्तम उदाहरण ऐहोल तथा बादामी में देखे जा सकते हैं, जो सातवीं शताब्दी के मध्य के हैं। किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जैन गुफाओं के समूह एलोरा मे मिलते हैं। यहाँ पाँच जैन गुफाएँ हैं, जिनमें तीन, छोटा कैलाश, इन्द्र सभा व जगन्नाथ सभा अत्यन्त सुन्दर हैं।
3. भारत में प्लास्टर पर चित्रकला के सर्वोत्तम नमूने अजन्ता की गुफाओं में मिलते हैं, जो ईसा की प्रथम से सातवीं शताब्दी के मध्य निर्मित हुई। यहाँ स्थित 29 गुफाओं में से 16 गुफाओं में चित्रकला दर्शनीय है। अधिकांश चित्र 400-640 ई० के दौरान वाकाटकों तथा पल्लवों के संरक्षण में बनाए गए। इन चित्रों में बुद्ध के जीवन सम्बन्धी घटनाओं व जातक कथाओं के चित्र मिलते हैं।
4. प्राचीन काल में विज्ञान के क्षेत्र में महान उन्नति हुई। ऋग्वेदिक आर्यनों ने ब्राह्मण विज्ञान में बहुमूल्य योगदान दिया। ऋग्वेद में अणु से ब्राह्मण की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, जोकि आधुनिक सिद्धान्त के बहुत करीब है। यजुर्वेद में तत्कालीन खगोल की अच्छी जानकारी मिलती है। ज्योतिष वेदांग में खगोलविद्या की व्यावहारिक उपयोगिता की जानकारी दी गई है। ब्राह्मणों तथा आरण्यकों में भी खगोल सम्बन्धी विषयों के सन्दर्भ मिलते हैं।

   चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। विभिन्न रोगों के लिए जड़ी–बूटियों, औषधियों आदि की खोज चिकित्सकों द्वारा की गई। कनिष्क के समकालीन (पहली शताब्दी ईसवी) चरक भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रतिष्ठित चिकित्सक थे। गणित के क्षेत्र में ''शून्य की संकल्पना'' तथा 'दशमलव प्रणाली' का उद्‌भव इसी युग में हुआ था। आर्यभट्ट, वराहमिहिर व ब्रह्मगुप्त इस काल के महान गणितज्ञ व खगोलशास्त्री थे।
5. राजनीतिक स्थिरता समग्र समृद्धि की ओर ले जाती है, क्योंकि स्थिरता देश के भीतर एक शांतिपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करती है, जो शांति लाती है। इससे समृद्धि सुनिश्चित होती है। अस्थिरता नीतियों में भी अस्थिरता लाती है और कार्यों में हस्तक्षेप तथा बाधा उत्पन्न करती है।

❑

16. हमारी पृथ्वी और सौरमण्डल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) आकाशगंगा 2. (a) बुध 3. (c) शुक्र 4. (b) गैनिमीड

(ख) 1. पृथ्वी 2. उल्कापिंड 3. सप्तऋषी मण्डल
4. मंगल और बृहस्पति

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (i) 3. (iv) 4. (v) 5. (ii)

(ङ) 1. सूर्य और उसके परिवार; जिसमें आठ ग्रह, सौ से अधिक उपग्रह, लाखों क्षुद्र ग्रह 'उल्काएँ व अनगिनत' धूमकेतू हैं, को सौरमण्डल कहते हैं। सौरमण्डल के केन्द्र में सूर्य होता है, जिसके चारों ओर ग्रह चक्कर लगाते हैं।

2. हमारा सौरमण्डल जिस आकाश गंगा में स्थित है, उसे मिल्की वे या मन्दाकिनी कहते हैं। यह तारों की नदी के समान दिखाई देती है।

3. शुक्र को 'भोर का तारा' कहा जाता है।

4. शुक्र हमारा निकटतम पड़ोसी है।

5. धूमकेतु लंबी पूँछ वाली बड़ी चमकीली वस्तुएँ हैं, जिन्हें रात के समय आकाश में इधर-उधर होते देखा जा सकता है, जैसे हैली धूमकेतु, जिसका नाम ब्रिटिश वैज्ञानिक एडमंड हेली पर रखा गया।

6. मंगल ग्रह को लाल रंग का होने के कारण इसे 'लाल ग्रह' कहते हैं।

(च) 1. ग्रहों को दो समूहों में बाँटा गया है—आन्तरिक ग्रह तथा बाह्य ग्रह। बुध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल को आन्तरिक ग्रहों में रखा गया है। इन ग्रहों को स्थलीय (पृथ्वी के समान) ग्रह भी कहा जाता है, क्योंकि ये मुख्य रूप से लोहे और चट्टान से बने घने चट्टानी पिंड हैं। बृहस्पति, शनि, अरुण तथा वरुण बाह्य ग्रह हैं। इन ग्रहों का बड़ा आकार तथा बड़ा उपग्रह परिवार होता है। ये सभी बाह्य गृह हाइड्रोजन, हीलियम, अमोनिया तथा मीथेन और ऐसी ही गैसों से बने हैं। इसलिए इन्हें 'गैस दानव' कहते हैं। सभी ग्रह अत्यधिक तेजी से घूमते हैं और घना वातावरण रखते हैं।

2. एक तारा मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस का एक बड़ा गोला होता है। इनकी अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश होते हैं; जैसे—हमारा सूर्य एक तारा है।
एक ग्रह एक ग्लोब के आकार का आकाशीय पिंड है, जो चारों ओर अण्डाकार कक्षाओं में घूमता है। तारा जो आकाश में अपनी निश्चित स्थिति में दिखाई देता है, उसके विपरीत ग्रह अपनी स्थिति बदलता है। इसलिए इसे ग्रह या पथिक कहा जाता है। इनके पास अपना प्रकाश नहीं होता है। यह अपने तारे से प्रकाश ग्रहण करता है; जैसे—हमारी पृथ्वी एक ग्रह है, जो सूर्य से ऊष्मा तथा प्रकाश प्राप्त करती है।

3. पृथ्वी के वातावरण में हानिरहित नाइट्रोजन गैस तथा जीवनदायिनी ऑक्सीजन गैस होती है। हवा, पानी तथा उपयुक्त तापमान इसे एक अनोखा ग्रह बनाते हैं, जिस पर जीवन है।

4. चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। पृथ्वी से लगभग 3,84,400 किलोमीटर दूर स्थित है और आकार में पृथ्वी का 25% है। यह पृथ्वी का एक चक्कर 27.3 दिनों में पूरा करता है तथा अपने अक्ष पर 720 घण्टों में एक बार घूमता है। चन्द्रमा की एक सतह सदैव हमसे दूर घूमी रहती है तथा अन्धेरे में रहती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि चन्द्रमा अपनी धुरी पर परिभ्रमण तथा पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा लगभग एक ही गति से पूरी करता है। पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए चन्द्रमा हमें प्रत्येक रात में बदला हुआ दिखाई देता है। हम चन्द्रमा का सूर्य से प्रकाशित भाग ही देख पाते हैं। अमावस्या से पूर्णिमा तक चन्द्रमा का आकार बढ़ता हुआ तथा पूर्णिमा से अमावस्या के बीच घटता हुआ दिखाई देता है। इस क्रम को 'चन्द्रमा की कलाएँ' कहते हैं। चन्द्रमा इन सभी कलाओं से एक बार 29 ½ दिन में गुजरता है। चन्द्रमा पर हवा तथा पानी नहीं है।
5. चन्द्रमा पर वायुमण्डल नहीं है। इसकी सतह पर केवल सफेद धूल है, जो उल्कापिंडों द्वारा बनाए गए गड्ढों से भरी हुई है। इसकी सतह पर बड़े काले धब्बे हैं, जिन्हें पहले समुद्र कहा जाता था। वास्तव में, वे प्राचीन ज्वालामुखियों से निकले लावा हैं। चन्द्रमा पर हवा तथा पानी नहीं है। अत: जीवन की सहायक सामग्रियों की अनुपस्थिति के कारण यहाँ जीवन सम्भव नहीं है।

❑

17. अक्षांश तथा देशांतर

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) पृथ्वी ग्रिड 2. (c) विषुवत् रेखा 3. (c) विषुवत् रेखा
4. (b) यू० के० 5. (c) 24

(ख) 1. अक्षांश रेखाएँ, देशान्तर रेखाएँ 2. उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव
3. प्रधान मध्याह्न रेखा 4. अक्षांशों, देशान्तर

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव ऐसे दो निश्चित बिन्दु हैं, जो सन्दर्भ बिन्दुओं की तरह प्रयोग किए जाते हैं।
2. अक्षांश भूमध्य रेखा (0° अक्षांश) के उत्तर तथा दक्षिण में किसी स्थान की कोणीय दूरी है।
3. देशान्तर प्रधान मध्याह्न (0° देशांतर) रेखा के पूर्व तथा पश्चिम में किसी स्थान की कोणीय दूरी है। जिसे देशान्तर रेखा कहते हैं।
4. देशांतर तथा अक्षांश रेखाओं के जाल को ग्रिड कहते हैं।
5. रूस, कनाडा, यू०एस०ए० तथा ऑस्ट्रेलिया जैसे बड़े विस्तृत देशों में एक से अधिक मानक समय निर्धारित किये जाते हैं।

(च) 1. अक्षांश के समानांतर पूर्व-पश्चिम दिशा में भूमध्य रेखा के समानांतर चलने वाले ग्लोब या मानचित्र पर खींची गई काल्पनिक रेखाएँ (वृत्त) हैं, जबकि देशान्तर के मेरिडियन दो ध्रुवों को मिलाते हुए उत्तर-दक्षिण दिशा में ग्लोब या मानचित्र पर खींची गई काल्पनिक रेखाएँ (अर्ध-वृत्त) होती हैं।

2. भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं, इसलिए भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में वर्षभर उच्च तापमान का अनुभव होता है। जैसे ही हम भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं, सूर्य की किरणें तिरछी हो जाती हैं। इसलिए तापमान में कमी आ जाती है। पृथ्वी पर निम्नलिखित ताप कटिबन्ध पाये जाते हैं—
   (i) उष्ण कटिबन्ध—यह कटिबन्ध कर्क रेखा तथा मकर रेखा के बीच विस्तृत है। यहाँ साधारणत: तापमान उच्च रहता है।
   (ii) शीतोष्ण कटिबन्ध—यह कटिबन्ध उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा तथा आर्कटिक रेखा के मध्य एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा तथा अण्टार्कटिक रेखा के मध्य स्थित है। इस कटिबन्ध में तापमान मध्यम ही रहता है, यहाँ न तो अधिक गर्मी पड़ती है न ही अत्यधिक ठंड पड़ती है।
   (iii) शीत कटिबन्ध—यह कटिबन्ध उत्तरी गोलार्द्ध में आर्कटिक वृत्त तथा उत्तरी ध्रुव के मध्य एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में अण्टार्कटिक वृत्त एवं दक्षिणी ध्रुव के मध्य विस्तृत है। यह बहुत ठण्डा कटिबन्ध है। यह कटिबन्ध लगभग पूरे वर्ष बर्फ से ढका रहता है, इसलिए इसे 'शीत कटिबन्ध' कहते हैं।

3. किसी स्थान पर, जब सूर्य आकाश में सबसे ऊपर होता है तो उस समय दिन के 12 बजे का समय होता है। इस समय के अनुसार सेट की गई घड़ियों के समय को उस स्थान का स्थानीय समय कहा जाता है। किसी एक देशान्तर पर स्थित सभी स्थानों का स्थानीय समय एक समान होता है। मानक समय किसी देश या क्षेत्र का वह एक रूप समय होता है जिसे कानून तथा प्रथा द्वारा माना गया है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा दो लगातार कैलेंडर तिथियों को अलग करने वाली 'सीमांकन रेखा' के रूप में कार्य करती है। इसलिए, यह मामूली संशोधनों के साथ 180° देशान्तर के संयोग से ग्लोब या मानचित्र पर खींचा जाता है। ये बदलाव इसलिए किये जाते हैं क्योंकि जहाजों द्वारा दिनांकों का समायोजन किया जाता है। जैसे ही जहाज पूर्व की ओर इस रेखा को पार करते हैं, वे अपने कैलेंडर में एक दिन जोड़ देते हैं और इसे पश्चिम की ओर पर करते समय अपने कैलेंडर से एक दिन घटा देते हैं।

5. विभिन्न स्थानों का स्थानीय मानक समय भिन्न-भिन्न होता है। इससे एक देश के लिए अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। भारत जैसे देश में रेलवे समय-सारणी तैयार करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि एक दिन में रेलवे को अनेक देशान्तर पार करने पड़ते हैं। भारत में अरूणाचल प्रदेश तथा गुजरात के स्थानीय समय में लगभग दो घण्टें का अन्तर है। इसीलिए पूरे देश में एक मानक समय की आवश्यकता को स्वीकार करना पड़ा।

❑

18. पृथ्वी की गतियाँ

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) ऊषाकाल 2. (a) पृथ्वी का परिभ्रमण
3. (d) ऋतु परिवर्तन 4. (c) मार्च में 5. (c) 24

(ख) 1. मार्च 21, सितम्बर 23 2. शीत 3. पश्चिम, पूर्व
4. आर्कटिक प्रदेशों

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (i)

(ड) 1. पृथ्वी की दो गतियाँ परिक्रमण तथा परिभ्रमण हैं।
2. एक लीप वर्ष में 366 दिन होते हैं। यह हर 4 वर्ष बाद आता है।
3. पृथ्वी की परिक्रमण गति ऋतु परिवर्तन के लिए उत्तरादायी है।
4. आर्कटिक वृत्त से आगे का भाग लगातार 24 घण्टे सूर्य के प्रकाश में रहता है। इसीलिए इस प्रदेश को 'मध्य रात्रि के सूर्य की भूमि' कहा जाता है।

(च) 1. (a) पृथ्वी का अपने अक्ष पर 24 घण्टे में एक बार घूमना घूर्णन कहलाता है, इसके कारण दिन और रात होते हैं जबकि परिभ्रमण पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना कहलाता है। पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में 365¼ दिन लगते हैं। जिसके कारण अलग-अलग मौसम तथा दिन और रात की लम्बाई होती है।

(b) **ग्रीष्म संक्रान्ति**—21 जून को सूर्य कर्क रेखा (23½° उत्तर) पर लम्बवत् चमकता है अब उत्तरी गोलार्द्ध पूर्व की ओर झुक जाता है और सूर्य का प्रकाश अधिकतम समय तक इस भाग पर पड़ता है। इसे **ग्रीष्म संक्रान्ति** कहते हैं।

शीत संक्रान्ति—22 दिसम्बर को सूर्य मकर रेखा (23½° द०) पर लम्बवत् चमकता है दक्षिणी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुक जाता है। इस स्थिति को **शीत संक्राति** कहते हैं।

2. पृथ्वी की परिभ्रमण गति के कारण दिन और रात होते हैं। पृथ्वी 24 घण्टे में एक बार अपनी अक्ष पर परिभ्रमण करती है। पृथ्वी का वह हिस्सा जो सूर्य की तरफ होता है उस पर दिन तथा दूसरे हिस्से पर रात होती है। इस प्रकार 24 घंटे में दिन और रात होते हैं। पृथ्वी के प्रत्येक भाग को बारी-बारी से सूर्य का प्रकाश मिलता है।

3. सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिक्रमण से मौसम बनते हैं। 21 जून को सूर्य कर्क रेखा (23½ उ०) पर लम्बवत् चमकता है। अब उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुक जाता है इसलिए उत्तरी गोलार्द्ध में गर्मी का मौसम तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में सर्दी का मौसम होता है।

22 दिसम्बर को सूर्य मकर रेखा (23½° द०) पर लम्बवत् चमकता है। दक्षिणी गोलार्द्ध सूर्य के सामने होता है इसलिए दक्षिणी गोलार्द्ध में गर्मी का मौसम होता है तथा उत्तरी गोलार्द्ध में सर्दी का मौसम होता है। 21 मार्च तथा 23 सितम्बर को सूर्य

की किरणें कर्क रेखा पर लम्बवत् पड़ती है दोनों गोलार्द्धों पर समान ताप पड़ता है। 21 मार्च को उत्तरी गोलार्द्ध में बसंत का मौसम तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में पतझड़ का मौसम होता है। 23 सितम्बर को उत्तरी गोलार्द्ध में पतझड तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में वसंत का मौसम बनता है।

4. पृथ्वी के सूर्य की चारो ओर परिक्रमण के समय ध्रुवों के झुके होने के कारण ध्रुव सूर्य की तरफ एक के बाद एक झुके होते हैं। छ: महीने के लिए जब उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की तरफ होता है। यह दक्षिण गोलार्द्ध की अपेक्षा अधिक सूर्य का प्रकाश ग्रहण करता है। उस समय दक्षिणी ध्रुव अंधेरे में रहता है। परिणामस्वरूप उत्तरी गोलार्द्ध में दिन लम्बे होते हैं जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में राते छोटी हैं। इसके विपरीत वर्ष के आधे दूसरे हिस्से में दक्षिणी गोलार्द्ध के सूर्य की तरफ झुके होने के कारण दिन लम्बे तथा राते छोटी होती हैं।

❑

19. ग्लोब और मानचित्र

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) ग्लोब द्वारा 2. (d) चपटी 3. (c) पृथ्वी का त्रि-विमीय चित्र
4. (c) ग्लोब द्वारा 5. (b) चार 6. (c) जलराशियाँ

(ख) 1. उत्तर रेखा 2. ग्लोब 3. विषयक 4. स्थूल आरेख

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (iii)

(ङ) 1. ग्लोब पृथ्वी का त्रि-विमीय नमूना है।

2. मानचित्र पृथ्वी या उसके किसी भाग का एक द्वि-विमीय चित्र होता है, जो समतल सतह पर किसी मापक के अनुसार बनाया जाता है। हमें किसी स्थान की स्थिति का पता करने के लिए मानचित्र की आवश्यकता होती है।

3. एक मानचित्र पर सतह पर मौजूद विभिन्न विशेषताओं को दिखाना सम्भव नहीं है। किसी दिए गए क्षेत्र में कई भौतिक विशेषताएँ हो सकती हैं जैसे पहाड़ियाँ और नदियाँ या सांस्कृतिक विशेषताएँ जैसे—भवन, सड़कें, रेलवे लाइन, पार्क आदि। इसलिए मानचित्र पर इन विशेषताओं को दर्शाने के लिए विशिष्ट संकेतों अथवा प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।

4. दूरी, दिशा तथा प्रतीक मानचित्र के अनिवार्य तत्त्व हैं।

(च) 1. ग्लोब के लाभ व हानियाँ निम्नलिखित हैं—

लाभ—पृथ्वी के आकार को ग्लोब द्वारा भलिभाँति प्रदर्शित किया जा सकता है जो कि पृथ्वी का वास्तविक प्रतिरूप या नमूना है, यह ध्रुवों, अक्षांशों, देशान्तरों, महासागरों और महाद्वीपों आदि को सटीक जानकारी देता है क्योंकि यह पृथ्वी का त्रिविमीय दृश्य प्रदान करता है। इसे उसी प्रकार घुमाया जा सकता है। जिस प्रकार

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। पृथ्वी पर बदलने वाले मौसम के बारे में हम आसानी से समझ सकते हैं।

हानि—यद्यपि ग्लोब पृथ्वी का वास्तविक चित्रण करता है, फिर भी इसे हर जगह ले जाना आसान नहीं है जबकि आजकल मुड़े हुए ग्लोब भी उपलब्ध हैं जो अधिक उपयोगी हैं। ये हमें छोटे स्थान, क्षेत्र, जिला तथा राज्य के बारे में विशिष्ट जानकारी नहीं दे सकता है।

2. मानचित्र पृथ्वी या उसके किसी भाग का एक द्वि-विमीय चित्र होता है, जो समतल सतह पर किसी मापक के अनुसार बनाया जाता है। जिस प्रकार किसी इमारत, क्षेत्र अथवा कमरे का बाह्य रेखांकन का चित्रण होता है। यह सभी विवरणों को सूक्ष्मता से दर्शाता है। एक मापचित्र, एक नक्शे के समान पैमाने और दिशा के लिए सही खींची जाती है। लेकिन यह एक नक्शे में अलग होती है क्योंकि एक नक्शा एक क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को दिखाता है, जबकि एक मापचित्र इमारतों और स्थानों के विस्तृत बाह्य दृश्य को दिखाता है।
3. विशिष्ट सूचना के आधार पर भौतिक मानचित्र, मृदा मानचित्र वनस्पति मानचित्र, राजनीतिक मानचित्र, जनसंख्या मानचित्र, रोड मानचित्र आदि हो सकते हैं। ऐसे मानचित्र निश्चित विषय अथवा थीम को प्रस्तुत करते हैं, उन्हें विषयगत नक्शे कहते हैं।
4. दिशा मानचित्र की अनिवार्य विशेषता है। चार प्रमुख दिशाएँ हैं—उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। इन्हें मुख्य बिन्दु कहते हैं। एक बार मुख्य दिशा जानने के बाद अन्यों को आसानी से पहचाना जाता है। एक मानचित्र में केवल उत्तर दिशा को तीर से दिखाया जाता है। तीर के ऊपरी सिरे पर N लिख दिया जाता है, जो उत्तर दिशा को सूचित करता है।
5. एक सपाट नक्शा बनाना असंभव है। एक गोल ग्रह की सतह को एक सपाट नक्शे पर नहीं बनाया जा सकता है। मानचित्र जितना छोटा क्षेत्र प्रदर्शित करता है, वह मानचित्र उतना ही सटीक होता है।

❑

20. पृथ्वी के प्रमुख परिमण्डल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) आर्कटिक महासागर 2. (a) मैदान 3. (d) स्थलमण्डल

(ख) 1. प्रशान्त महासागर 2. दक्षिणी 3. एशिया
4. महासागरों

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (i) 2. (iii) 3. (iv) 4. (ii)

(ङ) 1. पृथ्वी के चार मुख्य कार्यक्षेत्र हैं—स्थलमण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल और जैवमण्डल।

2. पृथ्वी के प्रमुख महाद्वीप एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका, यूरोप तथा ऑस्ट्रेलिया हैं।

3. प्रमुख भू-आकृतियाँ हैं—
पर्वत : उदाहरण—हिमालय
पहाड़ियाँ : उदाहरण—नागा पहाड़ियाँ
पठार : उदाहरण—भारत के प्रायद्वीपीय पठार
मैदान : उदाहरण—भारत का उत्तरी मैदान

4. उत्तरी गोलार्द्ध को स्थलीय गोलार्द्ध कहते हैं क्योंकि अधिकांश स्थलखण्ड इसी गोलार्द्ध में स्थित है।

(च) 1. पृथ्वी की भूमि की सतह अत्यधिक असमान हैं। कुछ भाग समतल तथा गहरे हैं जबकि कुछ उबड़-खाबड़ और समुद्र स्तर से हजारों मीटर ऊँचे हैं। प्रमुख भू-आकृतियाँ पर्वत, पहाड़ियाँ, पठार तथा मैदानी भाग हैं।

(i) पर्वत—आसपास की भूमि से ऊपर उठी हुई, तीव्र ढाल वाली ऊँची स्थलाकृति पर्वत होती है। जैसे—हिमालय, रॉकी, एंडीज, आल्पस आदि।

(ii) पहाड़ियाँ—पहाड़ियाँ मध्य ऊँचाई वाले क्षेत्र हैं। पहाड़ियाँ तीखी ढलान या मन्द ढलानों वाली होती हैं। ये साधारणत: पर्वतों से कम ऊँचाई वाली होती हैं। जैसे—गारो पहाड़ियाँ, नागा पहाड़ियाँ आदि।

(iii) पठार—यह आसपास की भूमि से ऊपर उठा हुआ चौरस धरातल होता है। इसे टेबल भूमि भी कहा जाता है। जैसे—भारत में ढक्कन का पठार।

(iv) मैदान—प्राय: चौरस सतह वाली भूमि जिसके ऊँचे तथा नीचे भाग के मध्य मामूली-सा अन्तर होता है, मैदान कहलाते हैं। जैसे—भारत का उत्तरी मैदान।

2. पृथ्वी को चारों ओर से घेरते हुए वायु का विशाल आवरण मौजूद हैं। यह एक आवरण होता है जो सूर्य से आने वाली रेडिएशन से हमारी सुरक्षा करता है। ओजोन सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रावॉयलेट किरणों को सोख लेती है तथा हमारी सुरक्षा करती है।

3. जलमण्डल हमारे लिए अनेक प्रकार से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह जल-चक्र में प्रमुख भूमिका निभाता है। महासागर और समुद्र नौ-संचालन और व्यापार के लिए भी आवश्यक हैं। कटी-फटी तटरेखा पोताश्रयों एवं बन्दरगाहों के विकास के लिए उपयुक्त होती है। महासागरों से हमें मछलियाँ, केकड़ें तथा अन्य समुद्री भोजन खाद्य पदार्थों के रूप में प्राप्त होता है। इनमें पेट्रोलियम तथा अनेक लाभदायक लवण घुले रहते हैं। इसीलिए महासागरों को 'भविष्य के भण्डार' कहकर पुकारा गया है।

4. यदि हम प्रकृति का संतुलन चाहते हैं तो हमें अपने संसाधनों का सोच-समझकर उपयोग करना चाहिए। हमें वायु, जल और भूमि-प्रदूषण को रोकना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा के लिए कुछ उपाय निम्नलिखित हैं—
   (i) वृक्षारोपण द्वारा वन-विनाश की भरपाई सम्भव है।
   (ii) कृषि की दोषपूर्ण पद्धतियों पर नियन्त्रण लगाना चाहिए और वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए।
   (iii) वनों के अन्धाधुन्ध शोषण को नियन्त्रित करना चाहिए।
   (iv) चरागाहों में अविवेकपूर्ण पशुचारण को नियन्त्रित करना चाहिए।
   (v) खनिजों के संरक्षण के लिए उनके उपयोग की वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करना आवश्यक है।
   (vi) वायु-प्रदूषण पर नियन्त्रण के लिए वाहनों तथा कारखानों में होने वाले प्रदूषण की रोकथाम के उपाय करने चाहिए।
   (vii) प्रकृति की 'जैव विविधता' का संरक्षण करना चाहिए।
   (viii) लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और पर्यावरण शिक्षा का प्रसार करना आवश्यक है।

❑

21. भारत : हमारा देश

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) 37°6′ उ० 2. (b) पाक जलडमरूमध्य 3. (d) मेघालय
4. (b) कंचनजंगा 5. (c) इन्दिरा पॉइण्ट

(ख) 1. कोहिमा 2. दक्षिण 3. सातवाँ 4. लक्ष्यद्वीप 5. 8, 28

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. कर्क रेखा अक्षांश के समानांतर देश के मध्य से गुजरती है जबकि भारत की मानक मध्याह्न रेखा 82°30′ पूर्वी देशान्तर है।
2. भारतीय प्रायद्वीप को घेरने वाले तीन समुद्र या महासागर पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में हिंद महासागर हैं।
3. भारत की 15,200 किलोमीटर लंबी भूमि सीमाएँ हैं, जिन्हें यह पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीनी, नेपाल, भूटान और म्यांमार के साथ साझा करता है। इसके अन्य पड़ोसी देश बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव हैं।
4. हिमालय से निकलने वाली तीन नदियाँ हैं—गंगा, ब्रह्मपुत्र और सतलुज।

(च) 1. वृहत अक्षांशीय और देशान्तरीय विस्तार का देश की स्थिति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भारत का अक्षांशीय विस्तार लगभग 29° है, जिसके कारण यहाँ विभिन्न प्रकार की जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य-जीवन मिलता है। भारत

का दक्षिणी छोर विषुवत् रेखा के निकट है, इसलिए यह भाग वर्षभर गर्म रहता है, जबकि उत्तरी भाग में उच्च अक्षांशीय स्थिति तथा समुद्र से दूरी के कारण ग्रीष्म तथा शीतकालीन तापमानों में भारी अन्तर रहते हैं। भारत के अत्यधिक अक्षांशीय विस्तार के कारण देश के विभिन्न भागों में दिन और रात की अवधि में भी अन्तर होता है। भारत के दक्षिणी भाग पर सूर्य की किरणें लम्बवत् चमकती हैं, जबकि उत्तरी भाग में ये किरणें तिरछी पड़ती हैं। अत: भारत के दक्षिणतम भाग में दिन तथा रात की अवधि में लगभग 45 मिनट का अन्तर होता है, जबकि सबसे उत्तरी भाग में यह अन्तर पाँच घण्टों का हो जाता है।

इसी प्रकार भारत पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर भागों का मध्य देशान्तरीय विस्तार भी लगभग 30 देशान्तरों के मध्य है, पश्चिम में द्वारका (गुजरात) तथा पूर्व में अरूणाचल प्रदेश के स्थानीय समयों में लगभग दो घण्टे का अन्तर है।

2. हिमालय की श्रेणियाँ पश्चिम में स्थित सिन्धु से पूर्व में स्थित ब्रह्मपुत्र तक फैली हैं, जिनकी लम्बाई लगभग 2500 किमी है। ये श्रेणियाँ एक-दूसरे के समानान्तर हैं, इनमें हिमाद्रि, हिमाचल तथा शिवालिक सम्मिलित हैं।

   हिमाद्री श्रेणी को वृहत हिमालय या महाहिमालय श्रेणी भी कहा जाता है, इसमें विश्व की कुछ सर्वोच्च श्रेणियाँ (8000 मीटर से अधिक) है जिनमें नेपाल में माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर), कंचनजंगा (8598 मीटर), नंगा पर्वत (8126 मीटर), नंदा देवी (7817 मीटर) आदि शामिल हैं, जो नेपाल-सिक्किम सीमा पर स्थित है, कंचनजंगा भारत की सबसे ऊँची चोटी है। ये चोटियाँ सदैव हिमाच्छादित रहती हैं। हिमालय की अनेक नदियाँ जैसे—गंगा, यमुना, गंडक, तिस्ता, कोसी आदि यहीं से निकलती हैं। हिमाद्रि श्रेणी के दक्षिण में स्थित हमालय श्रेणी को लघु हिमालय कहा जाता है। इसके दक्षिण में शिवालिक श्रेणी स्थित है। यह हिमालय की सबसे नीची श्रेणी है। असंगठित पदार्थों से निर्मित होने के कारण यह भूमि अपरदन तथा भूस्खलन का शिकार हो सकती है।

3. हिमालय पर्वत-श्रेणियों के दक्षिण में यह समतल और उर्वर मैदान विस्तृत हैं। इसका विस्तार पश्चिम में सतलज नदी (पंजाब) से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी (असम) तक है। इस मैदान की रचना हिमालय पर्वतों तथा उसके पार से निकलने वाली सतलज गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी से हुई है। यह मैदान विश्व के सबसे बड़े और उर्वर मैदानों में है।

4. विशाल उत्तरी मैदान के दक्षिण में भारत का प्रायद्वीपीय पठार विस्तृत है। यह त्रिभुजाकार पठार भारतीय उपमहाद्वीप का प्राचीनतम भाग है। इस पठार के दो भाग हैं—(i) मालवा का पठार, (ii) दक्कन का पठार। विन्ध्याचल और सतपुड़ा की श्रेणियाँ इन दोनों भागों को पृथक करती हैं।

   मालवा का पठार प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर में स्थित है। पश्चिम में यह अरावली की पहाड़ियों तथा दक्षिण में सतपुड़ा की पहाड़ियों से घिरा है। पूर्व में यह झारखण्ड स्थित छोटा नागपुर के पठार तक फैला है। 'दक्कन का पठार' विन्ध्याचल श्रेणी के

दक्षिण में प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर स्थित सतपुड़ा की पहाड़ियों तक विस्तृत है। सतपुड़ा के दक्षिण में तापी (ताप्ती) नदी भी पश्चिम की ओर बहती हुई एक ज्वारनदमुख बनाकर अरब सागर में प्रवेश करती है। दक्कन के पठार के पश्चिम और पूर्व में क्रमश: पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट स्थित है। पूर्व में बहने वाली अन्य नदियाँ जिनमें महानदी, कृष्णा या कावेरी प्रमुख हैं, बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व ये सभी नदियाँ वृहत डेल्टाओं का निर्माण करती हैं।

5. हाँ, भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का निर्णय सही था। भाषाई राज्य निर्माण ने निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की—
   इससे राज्यों के लोगों के बीच उनकी चुनी हुई सरकारों के साथ बेहतर संपर्क स्थापित किया।
   इससे संघीय ढाँचे का सुदृढ़ीकरण हुआ।
   इसने सत्ता का स्थानान्तरीकरण अच्छे ढंग से किया।
   हमारी संस्कृति और परंपरा को बनाए रखने के लिए विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं जो हमें अपने आधार से जोड़े रखती है।
6. हिमालय की नदियाँ पहाड़ों से गाद जिसे जलोढ के रूप में भी जाना जाता है, ले जाती है और इसे डेल्टाओं में जमा करती है। अत: गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान उपजाऊ है।

❑

22. विविधता और भेदभाव के विभिन्न प्रकार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) इस्लाम धर्म में 2. (c) बहुपति प्रणाली 3. (a) पूर्वाग्रह के कारण
4. (a) लड़कियों में 5. (c) दलितों के

(ख) 1. सबसे छोटी 2. निर्भर 3. आधार 4. शारीरिक 5. तथ्य

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (v) 2. (iv) 3. (i) 4. (iii) 5. (ii)

(ड) 1. विविधता से आशय है भौतिक तथा सांस्कृतिक विविधता। भौतिक विविधता से आशय है भौतिक विभिन्नता, विभिन्न जलवायवीय स्थितियाँ विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियाँ जबकि सांस्कृतिक विभिन्नता है भिन्न-भिन्न भाषाएँ, धर्म तथा वेशभूषा आदि।

2. भारत में विविधता, अपनी समृद्ध विरासत से हमें जोड़ती है, यह हमें बाँटती या कमजोर नहीं करती है बल्कि हमारी शक्ति को बढ़ाती है। कई विद्वानों ने विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों का अध्ययन किया है तथा विभिन्न धर्मों के आधार पर एक नैतिक आचार संहिता का सुझाव दिया है। विभिन्न भोजन की आदतें, कपड़े, त्यौहार तथा रीति-रिवाज हमें अपने जीवन के तरीकों में विविधता का आनंद लेने में सक्षम बनाते हैं। हमने विभिन्न कलाओं, विभिन्न प्रकार के संगीत तथा नृत्यों का

विकास किया है। वास्तव में, विविधता ने भारत में हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है। इसका अर्थ ही विविधता में एकता है।

3. विविधता की आवश्यकता है क्योंकि व्यक्तियों की अलग-अलग रुचियाँ, स्वाद तथा कौशल हैं। अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग कौशल में दक्ष होते हैं। ये डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षक, तकनीशियन, राजमिस्त्री, बढ़ई आदि हैं। सामुदायिक जीवन के लिए ये विविध कौशल आवश्यक हैं क्योंकि एक व्यक्ति अपनी सभी जरूरतों को स्वयं पूरा नहीं कर सकता है। किसान फसल और खाद्य अनाज उगाता है तथा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करता है जिनकी हमें आवश्यकता होती है। अत: हम पाते हैं कि समाज में व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर है।
4. भेदभाव और पक्षपात के कारण हैं सामाजिक पक्षपात अर्थात् वर्ग के आधार पर सामाजिक विभाजन, लड़के और लड़कियों के प्रति माता-पिता का भेदभावपूर्ण रवैया, धार्मिक भेदभाव, जातीय भेदभाव तथा आर्थिक असमानताएँ आदि।
5. पूर्वाग्रह तथा भेदभाव से जातीय संघर्ष, समाज का विघटन, सामाजिक और आर्थिक विकास धीमा होता है। वे एक राष्ट्र को कमजोर करते हैं, राजनीतिक अस्थिरता की ओर ले जाते हैं और लोगों के स्वस्थ विकास और वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

(च) 1. आर्थिक क्रियाकलापों में विविधता का निम्न प्रकार वर्णन कर सकते हैं—

प्राचीनकाल से ही (भोजन, वस्त्र, शरण तथा सुरक्षा) मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति समस्त समाजों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। मनुष्य इन आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ नियमों तथा कार्य-प्रणालियों के अनुसार करता है। विकास-क्रम के आधार पर आर्थिक-प्रणालियों को तीन वर्गों में रखा जाता है—आदिम, कृषिपरक तथा औद्योगिक आदिम आर्थिक व्यवस्था में आखेट, भोजन-संग्रह तथा आदिम कृषि सम्मिलित हैं। ये सभी मौलिक तथा प्राथमिक क्रियाएँ हैं।

इन समुदायों ने धीरे-धीरे भूमि और बढ़ते पौधों का उपयोग करके ज्ञान विकसित किया। औद्योगिक क्रान्ति ने आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था का निर्माण किया। औद्योगिक, शिक्षा, प्रशिक्षण व कौशल व्यवसाय धीरे-धीरे पेशेवर व्यवसाय में परिवर्तित हो गए। डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, नर्स, अध्यापक आदि पेशेवर व्यवसाय हैं।

2. **जाति**—जाति-व्यवस्था हिन्दू सामाजिक संगठन का आधार है। फ्रेंच समाजशास्त्री लुई ड्यूमा के अनुसार जाति-व्यवस्था शुद्धता तथा प्रदूषण के विचार पर आधारित है जो लोग प्रदूषण-शुद्धता पदानुक्रम में शिकार पर स्थित होते हैं, उन्हें समाज में उच्चतम स्थान तथा जो इस पिरामिड में सबसे नीचे होते हैं।

वर्ग—वर्ग का आधार आर्थिक होता है। इसकी कोई धार्मिक या वैधानिक मान्यता नहीं है। वर्ग-स्तर का निर्धारण व्यक्ति की सम्पत्ति उपलब्धि तथा क्षमता द्वारा किया जाता है। बॉटोमोर के अनुसार समाज में चार प्रकार के वर्ग मिलते हैं—(i) उच्चतर वर्ग, (ii) मध्यम वर्ग, (iii) कार्यशील वर्ग तथा (iv) कृषक वर्ग।

धर्म—आधुनिक समय में अनेक प्रकार के धर्म विद्यमान हैं जिनमें ईसाई, इस्लाम, हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी कन्फ्यूशियन तथा यहूदी धर्म प्रमुख हैं। धर्मों की विविधता दर्शनीय है। 19वीं शताब्दी में कई सम्प्रदाय अस्तित्व में आए जिन्होंने हिन्दू धर्म को एक संस्थागत आधार दिया।

3. यह सच है कि पक्षपात तथा भेदभाव को पूरी तरह समाज से मिटाया नहीं जा सकता परन्तु उन्हें निश्चित रूप से रोका या नियंत्रित किया जा सकता है। निम्नलिखित विभिन्न उपायों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है—
   (i) शिक्षा लोगों की सोच व्यापक करती है। वे पूर्वाग्रह तथा भेदभाव को मिटा सकती हैं।
   (ii) कानून ने समाज में भेदभाव मिटाने के लिए पर्याप्त प्रावधान किए हैं।
   (iii) कुछ विद्वानों के अनुसार अन्तर्जातीय, अन्तर्प्रादेशिक तथा अन्तर्प्रजातीय विवाह पूर्वाग्रहों तथा भेदभाव को कम करते हैं।
   (iv) पूर्वाग्रह तथा भेदभाव पर नियन्त्रण के लिए लहाई दृष्टिकोण सर्वोत्तम है। अब्दुल बहा के अनुसार, ''सम्पूर्ण मानवता एक प्रजाति तथा सन्तति है। ईश्वरीय विधान में प्रजातीय भिन्नता के लिए कोई स्थान नहीं है। मानव-मात्र में कोई भी भेदभाव प्राकृतिक या मौलिक नहीं हैं।'' पृथक्करण स्वाभाविक या भौतिक नहीं है और पूर्वाग्रह तथा भेदभाव स्वाभाविक विधान का भाग नहीं है।
   (v) असमान समूहों के सदस्यों को एकता के लिए प्रयास करना चाहिए।
   (vi) मित्रता तथा एकता को प्रोत्साहित करने वाली समितियाँ तथा केन्द्र, पूर्वाग्रह मिटाने वाले साहित्य का वितरण, लोगों में एकता को प्रोत्साहित करने वाली संस्थाओं की स्थापना, कार्यक्रमों का आयोजन आदि को प्रोत्साहित करना चाहिए।
   (vii) अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व की भावना को विकसित करने वाले प्रयासों की सराहना करनी चाहिए तथा उनको प्रोत्साहन देना चाहिए।

4. जाति के समय बहुत पहले बने थे जब सभी जातियों का गठन हुआ था। हर जाति के अपने रीति-रिवाज होते हैं। समय के साथ-साथ कुछ लोग समय के परिवर्तन की अपेक्षा नियमों को अधिक महत्त्व देने लगे। समाज के विभिन्न में लोगों ने विकास किया परन्तु समाज की हठधर्मिता के कारण नियम नहीं बदले। इसके अलावा, औपनिवेशिक युग के दौरान, जाति गणना तथा आधिकारिक अभिलेखों ने इसे भारत में जातिगत पहचान की संस्था को अधिक कठोर बना दिया।

❑

23. स्थानीय सरकार : पंचायती राज

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) प्रधान या मुखिया 2. (c) मानद सदस्य 3. (d) सरपंच
4. (c) खण्ड विकास समिति 5. (c) जिला परिषद्

(ख) 1. नागरिक 2. कार्य 3. पंचायती राज 4. पाठ 5. प्रतिनिधित्व

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (v) 4. (ii) 5. (iii)

(ड) 1. पंचायती राज गाँव में स्थानीय स्वशासी निकाय है इसके तीन अंग है—ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत।

2. ग्राम पंचायत पाँच लोगों की एक समिति है जो ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा पाँच वर्षों के लिए चुनी जाती है। इसके सदस्यों की संख्या राज्य सरकार द्वारा गाँव की जनसंख्या के अनुपात में निश्चित की जाती है। इनकी संख्या प्राय: 5 से 20 के मध्य होती है। 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1993 में 30% महिलाओं के लिए आरक्षित किए गए हैं। अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए 33% पद महिला पदों में से आरक्षित हैं।

3. ग्राम स्तर पर पंचायत निम्नलिखित समस्याओं का समाधान कर सकती है—
   (i) वे व्यवस्था बनाकर सार्वजनिक पेयजल, कुएँ, तालाब हैंडपम्प आदि समस्याओं का समाधान करती है।
   (ii) वे गाँव की सड़कों तथा जलमार्गों का निर्माण और रख-रखाव करते हैं।
   (iii) वे गाँव की सड़कों तथा गलियों में प्रकाश की व्यवस्था करते हैं।
   (iv) वे स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं।
   (v) वे पेड़ लगाते हैं।
   (vi) वे प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण करते हैं।
   (vii) वे कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा करते हैं।
   (viii) वे जन्म एवं मृत्यु के रिकॉर्ड रखती है।

4. वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिश पर आधारित है। संविधान के 73वें संशोधन अधिनियम 1993 ने इसे स्वीकृति दी है। इस अधिनियम के द्वारा निम्नलिखित त्रि-स्तरीय व्यवस्था की गई है—
   (i) ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत
   (ii) ब्लॉक स्तर पर ब्लॉक या पंचायत समिति
   (iii) जिला स्तर पर जिला परिषद्।

   संविधान संशोधन अधिनियम 1993 के अनुसार कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को छोड़कर सभी राज्यों में पंचायतों की स्थापना करने की व्यवस्था की गई है। पंचायत के सदस्यों की संख्या राज्य स्तर पर भिन्न हो सकती है, जिसमें महिलाओं तथा अनुसूचित जातियों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होना आवश्यक है।

5. जिला परिषद् में निम्नलिखित सदस्य होते हैं—
   (i) जिले के सभी ब्लॉक समितियों के अध्यक्ष (ब्लॉक प्रमुख)।
   (ii) जिले का प्रतिनिधित्व करने वाले लोकसभा तथा राज्यसभा के सभी सदस्य।
   (iii) जिले का प्रतिनिधित्व करने वाले विधानसभा और विधानपरिषद् के सभी सदस्य।

(iv) अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के प्रतिनिधि।

(v) महिला प्रतिनिधि।

जिला परिषद् के सदस्य एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं।

6. **ग्राम सभा**—गाँव के सभी व्यस्क व्यक्ति (18 वर्ष या अधिक आयु के) ग्राम सभा के सदस्य होते हैं।

ग्राम पंचायत—यह पाँच सदस्यों की समिति होती है जो ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा पाँच वर्षों के लिए चुनी जाती है। इसके सदस्यों की संख्या राज्य सरकार द्वारा गाँव की जनसंख्या के अनुपात में निश्चित की जाती है। इनकी संख्या प्राय: 5 से 20 के मध्य होती है।

(च) 1. स्थानीय सरकार ऐसी संस्था होती हैं जिसे स्थानीय समस्याओं के निराकरण करने तथा गाँव, कस्बे या नगर के लोगों को मूलभूत नागरिक सुविधाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से गठित किया जाता है। जलापूर्ति, विद्युत, परिवहन, शिक्षण संस्थाएँ, सफाई, स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र आदि सुविधाएँ ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में अच्छे जीवन के लिए आवश्यक हैं।

स्थानीय सरकार का महत्त्व तथा लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) स्थानीय लोग तथा उनके प्रतिनिधि अपने गाँवों या कस्बों की समस्याओं तथा आवश्यकताओं को बेहतर समझ सकते हैं।

(ii) स्थानीय लोग विकास कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं, क्योंकि वे यह जानते हैं कि ये कार्य उनकी भलाई के लिए हैं। अत: ये सरकारी संस्थाओं के साथ उन योजनाओं को पूरा करने में सहयोग देते हैं।

(iii) स्थानीय लोग प्रशासन करने में प्रशिक्षित हो जाते हैं। यह अनुभव उन्हें बाद में अगर आवश्यकता पड़ी तो, राज्य तथा केन्द्र सरकार चलाने में सहायक होता है।

(iv) स्थानीय लोग आत्मनिर्भर तथा उत्तरदायी हो जाते हैं। किसी भी आकस्मिक घटना की स्थिति में वे एक-दूसरे की सहायता करते हैं।

(v) स्थानीय स्वशासन, केन्द्र तथा राज्य सरकारों के दायित्वों को बाँटता है।

2. **संयोजन**—ब्लॉक समिति के सदस्य लोगों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नहीं चुने जाते। एक ब्लॉक में सभी ग्राम पंचायतों के प्रधान तथा पंच ब्लॉक समिति के लिए अपने प्रतिनिधि चुनते हैं।

इन चुने गए प्रतिनिधियों के अतिरिक्त निम्नलिखित सदस्य ब्लॉक समिति की रचना करते हैं—

(i) लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा तथा विधानपरिषद् के सभी सदस्य जो सम्बन्धित ब्लॉक से चुने गए हो।

(ii) ब्लॉक से सम्बन्धित नगर क्षेत्र समिति तथा अधिसूचित क्षेत्र समिति का चेयरमैन।

(iii) यदि ब्लॉक समिति में महिलाओं तथा अनुसूचित जातियों के प्रतिनिधि नहीं है तो ये सदस्य सम्बन्धित जिले के अधिकारी द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। एक ब्लॉक समिति में दो महिला सदस्य तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के चार प्रतिनिधि होने चाहिए।

ब्लॉक समिति के सदस्य अपना अध्यक्ष चुनते हैं जिसे ब्लॉक-प्रमुख या उपाध्यक्ष कहते हैं जो ब्लॉक प्रमुख की अनुपस्थिति में ब्लॉक समिति का काम देखता है। यदि समिति के सदस्य ब्लॉक प्रमुख के काम से सन्तुष्ट नहीं होते तो उसके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित करके उसे हटाया भी जा सकता है।

कार्य :

(i) ब्लॉक समिति अपने क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों के कामकाज का निरीक्षण करती है।

(ii) यह अपने निरीक्षण के अन्तर्गत क्षेत्र की सामुदायिक विकास योजनाओं को तैयार करती है।

(iii) यह लघु सिंचाई योजनाओं को कार्यान्वित करती है तथा क्षेत्र के किसानों में बीजों, उर्वरकों तथा कृषि उपकरणों का वितरण करती है।

(iv) यह बच्चों तथा प्रौढ़ों की शिक्षा का प्रबन्ध करती है तथा पेयजल की आपूर्ति, स्वच्छता, रोगों की रोकथाम, सड़क-निर्माण आदि कल्याणकारी कार्य करती है।

(v) यह ग्राम पंचायतों को उनके विकास-कार्यों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

(vi) यह पंचायतों के बजट की जाँच करती है।

(vii) यह गाँव के कारीगरों को प्रशिक्षण तथा विशेषज्ञों की सलाह उपलब्ध कराती है।

पंचायत समिति की बैठकों में ब्लॉक विकास अधिकारी भाग लेते हैं। चेयरमैन तथा ब्लॉक विकास अधिकारी परस्पर सहयोग द्वारा ब्लॉक समिति की विकास योजनाओं को लागू करते हैं।

आय के स्त्रोत :

अपने विभिन्न खर्चों के लिए ब्लॉक समिति को धन की व्यवस्था करनी पड़ती है। उसकी आय के स्त्रोत हैं—

(i) भूमि, भवन, पशुओं तथा मेलों पर लगने वाले कर।

(ii) गाँवों को विशेषज्ञों की सेवाएँ प्रदान करने के लिए मिलने वाली धनराशि।

(iii) राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान।

3. ग्राम स्तर पर पंचायत के गठन में तीन स्वतन्त्र संस्थाएँ सम्मिलित हैं—

(i) ग्राम सभा (ii) ग्राम पंचायत (iii) न्याय पंचायत

(i) **ग्राम सभा**—ग्राँव के सभी व्यस्क व्यक्ति (18 वर्ष या अधिक आयु के) ग्राम सभा के सदस्य होते हैं।

(ii) **ग्राम पंचायत**—ग्राम पंचायत का शाब्दिक अर्थ है 'पाँच सदस्यों की समिति' जो ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा पाँच वर्षों के लिए चुनी जाती है। इसके सदस्यों की संख्या राज्य सरकार द्वारा गाँव की जनसंख्या के अनुपात में निश्चित की जाती है। इनकी संख्या प्राय: 5 से 20 के मध्य होती है। तिहत्तरवें संविधान संशोधन अधिनियम 1993 में 30% पद महिलाओं के लिए आरक्षित किए गए हैं। अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए 33% पद महिला पदों में से आरक्षित हैं।

(iii) **न्याय पंचायत**—न्याय पंचायत की स्थापना का निर्धन लोगों के लिए बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि इससे छोटे विवादों पर कानूनी कार्यवाही का अवांछित खर्च बचता है, साथ ही कम खर्चीला न्याय शीघ्रतापूर्वक मिल जाता है।

4. जिला परिषद् राज्य सरकार और जिले के भीतर ब्लॉक समिति के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है। जिला परिषद् के सदस्य एक अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं। अध्यक्ष बैठकों की अध्यक्षता करते हैं। ये अधिकारी तब तक अपने पद पर बने रहते हैं जब तक वे जिला परिषद् के सदस्यों का विश्वास प्राप्त करते हैं। यदि उनका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं है। तो उन्हें अविश्वास प्रस्ताव पारित करके पद से हटाया जा सकता है। निर्णय जिला परिषद् में बहुमत से लिए जाते हैं। जिला परिषद् और ब्लॉक समितियाँ विभिन्न कार्यों को करने के लिए आपस में कई उप-समितियों की नियुक्ति करती हैं। इनमें शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नियोजन, वित्त कृषि पशुपालन, परिवार, नियोजन आदि पर उप-समितियाँ शामिल हैं।
उप विकास आयुक्त या उसी रैंक का एक अधिकारी जिला परिषद् का मुख्य कार्यकारी सह-सचिव होता है। वह जिला परिषद् में सरकार का प्रतिनिधि होता है।

5. हाँ, एक ग्राम में महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए सीटें आरक्षित करना उचित हैं ताकि उन्हें निर्णय लेने में उचित भागीदारी मिले। उनके अधिकारों की सुरक्षा होगी तथा निर्णय लेने में समान भागीदारी मिलेगी।

❑

24. जिला प्रशासन

पढ़ें और उत्तर दें

(क)	1. (b) थानाध्यक्ष	2. (c) वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक		3. (d) ये सभी
(ख)	1. नाप	2. सबसे छोटी	3. सम्पत्ति	4. बटी
(ग)	1. (✗)	2. (✓)	3. (✗)	4. (✗)
	5. (✓)	6. (✓)		
(घ)	1. (ii)	2. (iii)	3. (iv)	4. (i)

(ड) 1. पुलिस का कार्य कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना है।

2. पटवारी के दो कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) गाँव से भूमि राजस्व इकट्ठा करना

(ii) भूमि-अभिलेखों का रख-रखाव करना।

3. एक तहसीलदार का काम भूमि राजस्व एकत्र करना और एक तहसील में भूमि रिकॉर्ड बनाए रखना है।

4. एक जिले के सभी थानों का प्रभारी पुलिस अधीक्षक होता है। आयुक्त के मुख्यालय में एक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक होता है।

5. नए कानून में पुत्रियों तथा माताओं को भी भूमि में बराबर का हिस्सा मिला करेगा, इस कानून ने स्त्रियों को लाभ पहुँचाया है। अब वे वित्तीय रूप से अधिक सुरक्षित हो गई हैं।

(च) 1. निर्बाध नागरिक जीवन के लिए शान्ति तथा सुरक्षा अनिवार्य है, अत: कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना प्रशासन का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य पुलिस विभाग द्वारा किया जाता है। सामान्यत: पुलिस अधीक्षक किसी जिले का उच्चतम पुलिस अधिकारी होता है। कमिश्नरी के मुख्यालय में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी होता है। पुलिस उपाधीक्षक, इन्स्पेक्टर, सब-इन्स्पेक्टर हवलदार तथा कॉन्स्टेबल उसकी सहायता करते हैं।

पुलिस प्रशासन के लिए सम्पूर्ण जिले को अनेक सर्किलों में बाँटा जाता है। प्रत्येक सर्किल का अधिकारी पुलिस उपाधीक्षक होता है प्रत्येक सर्किल को अनेक थानों में बाँटा जाता है। थानाध्यक्ष थाने का प्रमुख अधिकारी होता है।

2. जिला कलेक्टर या जिलाधीश भूमि-राजस्व विभाग का मुखिया होता है। राजस्व अधिकारी या तहसीलदार उसकी सहायता करते हैं। तहसीलदार विवाद सुनता है तथा पटवारी के कार्यों का निरीक्षण करता है। वह यह भी सुनिश्चित करता है कि भूमि के रिकॉर्ड उचित प्रकार से बनाए गए हैं तथा राजस्व ठीक प्रकार से एकत्रित किया जा रहा है।

भूमि-राजस्व एकत्र करने तथा भूमि-अभिलेख रखने का कार्य गाँव में लेखपाल या पटवारी, परगने के कानूनगों तथा तहसील के तहसीलदारों द्वारा किया जाता है। किसानों से भूमि राजस्व संग्रह और क्षेत्रों में उत्पादित फसलों के विषय में सरकार को जानकारी उपलब्ध कराने के लिए भी पटवारी ही उत्तरदायी है।

3. कृषि एक ऐसा व्यवसाय है, जिसमें सम्पूर्ण परिवार, चाहे वे महिला पुरुष व बालक हों के सहयोग तथा ध्यान देने की आवश्यकता होती है। लघु किसानों के सम्बन्ध में जिनके पास भूमि का एक छोटा-सा टुकड़ा होता है। यह तथ्य और भी सत्य है कि स्त्रियाँ खेतों के काम में बराबर सहयोग देती है। किन्तु उनके पास भूमि का स्वामित्व नहीं होता है। कुछ समय पूर्व तक कुछ राज्यों में हिन्दू स्त्रियों को परिवार की कृषित भूमि में से कोई भाग नहीं मिलता था। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति उसके पुत्रों में बराबर बँट जाती थी।

हिन्दू उत्तराधिकार संशोधन अधिनियम 2005 के तहत अब स्थिति बदल गई है। नए कानून में पुत्रियों तथा उसकी माताओं को भी भूमि में बराबर का हिस्सा मिला करेगा। यह कानून देश के सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में लागू हो चुका है। इस कानून ने बड़ी संख्या में स्त्रियों को लाभ पहुँचाया है, अब वे आर्थिक रूप से अधिक सुरक्षित हो गई हैं।

❑

25. शहरी क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) म्युनिसिपल कमिश्नर 2. (c) 18 वर्ष 3. (a) पाँच वर्ष
4. (b) निर्वाचित निकाय 5. (d) ये सभी

(ख) 1. दुरुपयोग 2. प्रवेश 3. स्थापित 4. अनुपस्थिति, अध्यक्षता 5. ऋण

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii) 5. (v)

(ड) 1. जनता द्वारा निर्वाचित नगरपालिका के सदस्य को पार्षद कहते हैं। निर्वाचित सदस्य नगरपालिका के लिए शहर के कुछ अनुभवी तथा सम्मानित नागरिकों का चुनाव करते हैं। उन्हें एल्डरमैन (विशिष्ट व्यक्ति) कहते हैं।

2. एक नगर पार्षद शहर के लोगों द्वारा चुने गए नगरपालिका का सदस्य होता है।

3. नगर निगम के निर्वाचित सदस्य (पार्षद) अपने पीठासीन अधिकारी का चुनाव करते हैं, जिसे मेयर कहा जाता है।

4. नगर निगम का कार्य शहरवासियों के जीवन को निम्न प्रकार से प्रभावित करता है—
   (i) नगर निगम यह सुनिश्चित करता है कि शहरवासियों को सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति हो।
   (ii) नगर निगम शहर के कूड़ा-करकट को हटाने तथा नालियों को साफ करने की व्यवस्था करता है।
   (iii) यह महामारी के खिलाफ टीकाकरण तथा शहरवासियों के लिए अस्पताल और औषधालय प्रदान करने जैसी स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था करता है।
   (iv) यह सड़कों, पुलों आदि का निर्माण तथा मरम्मत कराता है, जिससे यातायात सुचारू हो।

5. नगर महापालिकाओं की आय के स्रोत निम्नलिखित हैं—
   (i) हाउस कर
   (ii) जल कर
   (iii) व्यापार तथा पेशे पर कर
   (iv) ऑक्ट्रोई : नगर सीमा में प्रवेश करने वाले सामानों पर लगने वाली चुंगी।

(v) साइकिल तथा रिक्शा जैसे बिना ईंजन वाले वाहनों पर कर।

(vi) राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान।

6. स्थानीय प्रशासन द्वारा पानी की व्यवस्था करने में निम्नलिखित कठिनाइयाँ शामिल हैं—

(i) शुष्क मौसम में नदियाँ तथा तालाब सूख जाते हैं। केवल भूमिगत जल नागरिकों की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकता। इस कारण जल की आपूर्ति घरेलू उपयोग के लिए पानी की कमी हो जाती है।

(ii) लोगों तथा कारखानों द्वारा जलराशियों के प्रदूषण से समस्या और भी अधिक तीव्र हो जाती है। लोगों को पेयजल साफ करने के लिए बहुत खर्च उठाना पड़ता है। प्रदूषित जल को शुद्ध करने में पर्याप्त व्यय होता है।

(च) 1. **नगरपालिका या नगर परिषद**—20,000 से अधिक तथा 5 लाख से कम आबादी वाले नगरों में नगरपालिका की व्यवस्था होती है। मुजफ्फरनगर, रामपुर, मथुरा, बुलन्दशहर, जौनपुर आदि नगरों में नगरपालिकाएँ कार्यरत हैं। नगरपालिका के सदस्यों की संख्या नगर की आबादी के अनुसार निश्चित होती हैं। सदस्यों के चुनाव के लिए नगर को अनेक खण्डों में बाँटा जाता है।

नगरपालिका का संगठन—प्रत्येक खण्ड से एक प्रतिनिधि का चुनाव किया जाता है। चुनाव में सभी वयस्क (18 वर्ष से अधिक आयु) मतदाताओं को मत देने का अधिकार होता है। नगरपालिका का चुनाव लड़ने के लिए अभ्यर्थी की आयु कम-से-कम 25 वर्ष होनी चाहिए। नगरपालिका के चुने हुए सदस्य नगर के कुछ सम्मानित तथा अनुभवी नागरिकों का भी चुनाव करते हैं। ऐसे नागरिकों को 'एल्डरमैन' कहा जाता है। नगरपालिका के एक-तिहाई स्थान महिलाओं के लिए तथा कुछ स्थान अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए भी आरक्षित होते हैं। नगरपालिका के सदस्यों का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। किन्तु यदि इसे भ्रष्टाचार में लिप्त या अयोग्य सिद्ध होती है तो इसे पाँच वर्ष से पूर्व भी भंग किया जा सकता है।

पदाधिकारी—नगरपालिका के सदस्य अपने चेयरमैन (अध्यक्ष) का चुनाव स्वयं में से करते हैं, जो नगरपालिका की बैठकों की अध्यक्षता करता है तथा निकाय के सभी कार्यों में तालमेल रखता है। उपाध्यक्ष की सहायता करता है तथा अध्यक्ष की अनुपस्थिति में सभी कार्यों की देखरेख करता है।

नगरपालिकाओं में कुछ स्थायी कर्मचारी होते हैं, जिनमें प्रशासनिक अधिकारी, सेक्रेटरी, स्वास्थ्य अधिकारी, सफाई इंस्पेक्टर, म्युनिसिपल इंजीनियर, जूनियर इंजीनियर, चुंगी इंस्पेक्टर, शिक्षा अधिकारी आदि सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ अधिकारी राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं जबकि अन्य नगरपालिका द्वारा नियुक्त होते हैं।

नगरपालिकाओं तथा महापालिकाओं के प्रमुख कार्य—नगरपालिकाओं तथा महापालिकाओं के कार्यों को अनिवार्य तथा ऐच्छिक दो वर्गों में रखा जा सकता है। दोनों के समान कार्य हैं, जो निम्नलिखित हैं—

अनिवार्य कार्य—

(i) स्वच्छ पेयजल का प्रबन्ध तथा पथ-प्रकाश की व्यवस्था।
(ii) नगर में सड़कों, गलियों, नाले-नालियों की सफाई आदि।
(iii) अस्पतालों का प्रबन्ध केन्द्र बनाना, शिशु-रोगों के टीके या दवा की व्यवस्था आदि।
(iv) सड़कों, पुलों आदि का निर्माण तथा मरम्मत जिससे यातायात सुचारू हो।
(v) शवदाह गृह, विद्युत शवदाह गृह, कब्रिस्तान आदि के लिए मैदान की उपलब्धता और व्यवस्था।
(vi) बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल तथा पुस्तकालय, संग्रहालय, चिड़ियाघर आदि की व्यवस्था।
(vii) जन्म तथा मृत्यु पंजीकरण।
(viii) फल, सब्जी, उपभोक्ता वस्तुओं के विक्रय के लिए बाजारों की व्यवस्था।

ऐच्छिक कार्य—

(i) आग बुझाने के लिए अग्निशामक गाड़ियों का प्रबन्ध।
(ii) पार्क, खेल के मैदान, पिकनिक स्थल, रात्रि आश्रम, बाल घर, पशु आवास, वाहन पार्किंग स्थल आदि का निर्माण।
(iii) सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण।
(iv) जल सम्भरण, विद्युत सम्भरण तथा स्थानीय बस-सेवाओं का प्रबन्ध करना।

प्रमुख विभाग—नगरपालिका विभिन्न कार्यों को विभिन्न विभागों द्वारा निष्पादित करती है जैसे—स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, इंजीनियरिंग विभाग, चुंगी विभाग आदि।

आय के स्त्रोत—(i) सम्पत्ति कर, (ii) व्यावसायिक एवं (iii) जल कर, (iv) इमारतों का किराया, (v) टोल टैक्स, (vi) ऑक्ट्रोई, (vii) वाहन टैक्स, (viii) सार्वजनिक प्रकाश तथा सार्वजनिक शौचालय, (ix) राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान आदि नगरपालिकाओं के विभिन्न विभागों के आय के स्त्रोत हैं।

2. **स्थानीय नगरीय निकायों का वर्गीकरण**—सभी नगरों व कस्बों में जनसंख्या के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। उसके अनुसार, नगर में विभिन्न प्रकार के स्वशासन निकाय कार्य करते हैं।

संविधान के 74वें संशोधन अधिनियम 1992 के द्वारा भारत के नगरीय क्षेत्रों में स्थानीय संस्थाओं की व्यवस्था की गई है। इस संशोधन के साथ नई IX-A तथा नई XII अनुसूची भी जोड़ी गई है। XIIवीं अनुसूची में 18 विषय वर्णित हैं।

उक्त संशोधन अधिनियम के अनुसार सम्पूर्ण देश में एक समान नगरीय स्वशासनिक संस्थाओं के गठन की व्यवस्था की गई है—

1. नगर महापालिका 2. नगरपालिका 3. नगर पंचायत

(अ) नगर क्षेत्र समिति (ब) अधिसूचित क्षेत्र समिति।

3. नगरपालिकाएँ तथा महापालिकाएँ विभिन्न कार्यों को विभिन्न विभागों द्वारा निष्पादित करती हैं।

(i) स्वास्थ्य विभाग—यह विभाग एक स्वास्थ्य अधिकारी के अधीन कार्य करता है सफाई निरीक्षण और टीकाकरण कर्मचारी स्वास्थ्य अधिकारी की सहायता करते हैं। यह विभाग म्युनिसिपल औषधालयों तथा चिकित्सालयों का प्रबन्ध करता है।

(ii) शिक्षा विभाग—यह विभाग बालक-बालिकाओं के लिए प्राथमिक पाठशालाओं तथा प्रौढ़ शिक्षा का प्रबन्ध करता है। इस विभाग का अधिकारी शिक्षा अधिकारी होता है।

(iii) इंजीनियरिंग विभाग—यह विभाग सड़कों, गलियों, तालाबों, टंकियों, बाजारों, विद्यालयों आदि का निर्माण करता है। इस विभाग का अध्यक्ष पालिका इंजीनियर होता है।

(iv) चुंगी विभाग—नगर की सीमाओं पर चुंगियाँ स्थापित की जाती हैं, जो चुंगी कर की वसूली करती हैं। अनेक नगरपालिका ने इस विभाग को समाप्त कर दिया है।

4. अपशिष्ट उपचार प्रक्रिया के लाभ इस प्रकार हैं—

(i) जीवन की गुणवत्ता में सुधार—जीवन की गुणवत्ता तथा जिन क्षेत्रों में सिस्टम संचालित हुआ है। वहाँ स्वच्छता की स्थिति में पहले से अधिक सुधार हुआ है।

(ii) प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण—यह हमें पर्यावरण को उसके मूल रूप में बनाए रखने में मदद करता है।

(iii) जल की बचत तथा प्रसंस्करण—जल के पुनः उपयोग से जल के अनावश्यक अपव्यय को रोका जा सकता है।

(iv) धन की बचत—यह पुनर्चक्रण के बाद उत्पाद का उपयोग करके धन बचाने में भी हमारी मदद करता है।

(v) जीवन स्तर—अपशिष्ट उपचार द्वारा अस्वच्छता से बचा जा सकता है। वातावरण स्वच्छ हो जाता है। आसपास रहने वाले लोग अच्छा स्वास्थ्य और समृद्ध जीवन बनाए रखते हैं।

❑

26. ग्रामीण एवं नगरीय आजीविकाएँ

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) गाँवों में 2. (d) ये सभी 3. (b) स्वरोजगार 4. (b) कारखानों में

(ख) 1. बड़े तथा 2. शहरों 3. परिधान 4. संरक्षित
5. स्वरोजगार

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (i)

(ङ) 1. खेतों के आकार के आधार पर कृषकों को चार वर्गों में रखा जाता है—(i) बड़े कृषक, (ii) मध्यम कृषक, (iii) छोटे कृषक, (iv) भूमिहीन कृषक।

2. गाँवों में कुछ गैर-कृषि कार्य हैं—बढाई, बुनाई, टोकरी बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना, लोहार आदि।

3. तृतीयक व्यवसाय वे हैं जिनमें वस्तु या सामान का उत्पादन नहीं किया जाता, अपितु लोग अपनी विशिष्ट सेवाएँ तथा जानकारी प्रदान करते हैं; जैसे—व्यापार तथा वाणिज्य, यातायात और संचार आदि।

4. नगरीय क्षेत्रों में विभिन्न लोग रहते हैं जो विभिन्न व्यवसायों में संलग्न हैं। इनमें कारखानों के श्रमिक, दुकानदार, व्यापारी, व्यवसायी (जैसे—शिक्षक, डॉक्टर, वकील, क्लर्क, बैंककर्मी आदि), छोटे विक्रेता, घरेलू नौकर आदि सम्मिलित हैं।

5. स्वरोजगार से अभिप्राय लोगों द्वारा अपने ही प्रतिष्ठानों में किए गए कार्य से है। इसके अन्तर्गत अपना व्यवसाय तथा दुकानें सम्मिलित हैं।

(च) 1. खेतों के आकार के आधार पर कृषकों को चार वर्गों में रखा जाता है—(i) बड़े कृषक, (ii) मध्यम कृषक, (iii) छोटे कृषक तथा (iv) भूमिहीन कृषक।

(i) बड़े कृषक—इनके पास 5 हेक्टेयर से अधिक आकार वाले जोत (फार्म, खेत) हैं। आमतौर पर ये लोग कृषक के रूप में कार्य नहीं करते। ये अपनी भूमि को ठेके पर दे देते हैं तथा फसल को बाँट लेते हैं। कभी-कभी ये लोग भूमिहीन कृषकों को नियुक्त करते हैं तथा उन्हें नकद या फसल के रूप में वेतन देते हैं। ये लोग आधुनिक तथा उन्नत प्रकार के कृषि उपकरण, पम्पसेट, ट्यूबवेल आदि प्रयुक्त करते हैं। ये बड़े और पक्के घरों में रहते हैं। अत्यधिक धनी होने के कारण ये लोग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। खेती के अतिरिक्त ऐसे कृषक व्यापार, व्यवसाय, विनिर्माण आदि में भी संलग्न रहते हैं।

(ii) मध्यम कृषक—ऐसे कृषक 2-5 हेक्टेयर भूमि पर खेती करते हैं। अधिकांशत: ये अपनी ही भूमि पर खेती करते हैं तथा अपने उपभोग के लिए ही फसलें उगाते हैं। इस प्रकार की खेती को 'जीविका निर्वाहक कृषि' कहा जाता है। इस कृषि-प्रणाली में अधिकांश कृषि उत्पादन स्थानीय रूप

से ही खप जाता है। ऐसे कृषक प्राय: पुराने किस्म के कृषि उपकरणों का प्रयोग करते हैं, किन्तु कभी-कभी ये ट्रेक्टर हार्वेस्टर आदि किराए पर भी ले लेते हैं। ये लोग अधिकांशत: गेहूँ, जौ, चावल, मक्का आदि खाद्यान्न अपने उपभोग के लिए उगाते हैं।

(iii) छोटे कृषक—ऐसे कृषक 2 हेक्टेयर से कम भूमि के स्वामी होते हैं। ये अपने परिवार के पोषण के लायक भी उत्पादन नहीं कर पाते, क्योंकि खेती से प्राप्त उत्पादन उनकी पारिवारिक आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाता है।

(iv) भूमिहीन कृषक—इन कृषकों के पास अपनी कोई भूमि नहीं होती है। ये बड़े किसानों के लिए वेतन या बँटाई पर काम करते हैं। ये लोग अपना भरण-पोषण तक नहीं कर पाते। अत: ये नगरों में दैनिक वेतन पर श्रमिकों की भाँति कार्य करने के लिए गाँव से पलायन कर जाते हैं।

2. मुन्ना एक भूमिहीन किसान है। उसे फसल उगाने के लिए भूमि की आवश्यकता है। वे किसान जिनके पास अपनी भूमि नहीं है वे उधार, किराये पर भूमि को लेते हैं। वे रोज कमाने खाने वाले लोग हैं तथा उनके पास इतना धन नहीं होता है कि वे जमीन किराये पर ले सकें। उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के ऋण लेना पड़ता है।

3. नगरीय क्षेत्रों में विभिन्न लोग रहते हैं जो विभिन्न व्यवसायों में संलग्न हैं। इनमें कारखानों के श्रमिक, दुकानदार, व्यापारी व्यवसायी (जैसे—शिक्षक, डॉक्टर, वकील, क्लर्क, बैंक कर्मी आदि), छोटे विक्रेता, घरेलू नौकर आदि सम्मिलित हैं।

(i) कारखाना श्रमिक—ये लोग नगरीय जनसंख्या का एक बड़ा भाग होते हैं, क्योंकि नगरों में या नगरों के आसपास छोटे-बड़े अनेक कारखाने स्थित होते हैं।

(ii) दुकानदार एवं व्यापारी—ये लोग घरेलू तथा अन्य कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं। ऐसे व्यक्ति बड़ी संख्या में पाए जाते हैं; क्योंकि भारत में अधिकांश नगर व्यापारिक नगरों के वर्ग में आते हैं। वस्तुत: यह प्रकार्य (व्यापार) सभी भारतीय नगरों में सार्वभौमिक रूप से प्रचलित हैं।

(iii) व्यवसायी—इनके अन्तर्गत शिक्षक, डॉक्टर, वकील, बैंक कर्मी, सरकारी कर्मचारी, पुलिस वाले, डाकिए, आग शमन वाले आदि आते हैं, जो अपने-अपने ढंग से समाज की सेवा करते हैं।

(iv) अन्य श्रमिक—इनमें सब्जी तथा फल विक्रेता, दूधिये, टैक्सी ड्राइवर, रिक्शा खींचने वाले, टेम्पो ड्राइवर, घरेलू नौकर, नाई, मोची, धोबी आदि भी होते हैं जो नगरवासियों को विविध प्रकार की सेवाएँ प्रदान करते हैं।

4. रोजगार दो प्रकार का होता है—स्वरोजगार तथा वेतनपरक रोजगार। अवधि के आधार पर रोजगार अस्थायी तथा स्थायी प्रकार का होता है।

स्वरोजगार—इसका अभिप्राय लोगों द्वारा अपने ही प्रतिष्ठानों में किए गए कार्य से है। इसके अन्तर्गत अपना व्यवसाय (business) तथा दुकानें सम्मिलित हैं। ऐसे व्यक्ति अपना व्यवसाय स्वतन्त्र रूप से चलाते हैं। इनकी आय इनके प्रतिष्ठान के आकार, सामान जिसका वे उत्पादन या विक्रय करते हैं, व्यवसाय में लगाई गई पूँजी तथा उनके उद्यम पर निर्भर करती है। दुकानदार तथा व्यवसायी लोग स्वरोजगार वर्ग का एक बड़ा भाग हैं।

वेतनपरक रोजगार—इसके अन्तर्गत वे नौकरियाँ सम्मिलित हैं जिनमें प्रबन्धक, टेक्नीशियन, इंजीनियर, एकाउण्टेण्ट तथा श्रमिक अपनी सेवाओं के बदले में वेतन प्राप्त करते हैं। वेतनपरक रोजगार नियमित या स्थायी आधार पर अथवा अस्थायी या दैनिक वेतन पर आधारित होता है। कभी-कभी ठेके पर आधारित रोजगार भी होता है। श्रमिक, बढ़ाई, पेण्टर, सफाई-मजदूर आदि ऐसे ही कार्यकर्त्ता हैं।

5. स्थानान्तरण का अर्थ है—एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही प्रमुख व्यवसाय है, जो कृषकों को मौसमी रोजगार प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त छोटे तथा भूमिहीन किसान खेती से अपनी जीविका निर्वाह लायक धन नहीं कमा पाते हैं। अपनी आय में वृद्धि करने के लिए उन्हें अवकाश के समय में अतिरिक्त कार्य करने की आवश्यकता होती है। जब खेतों में कोई काम नहीं होता, तब वे प्राय: नगरीय क्षेत्रों में रोजगार की खोज में जाते हैं। प्राय: ऐसे ग्रामीण लोग निकटवर्ती या दूरस्थ नगरीय क्षेत्रों में जाकर स्थायी रूप से बस जाते हैं। इससे नगरों में भीड़-भाड़ बढ़ जाती है तथा अस्वच्छता (गन्दगी) उत्पन्न हो जाती है। किन्तु ऐसे विस्थापन या स्थानान्तरण ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करते हैं, जो दोनों के लिए लाभप्रद होते हैं। अतिरिक्त आय से ग्रामीण लोग एक ओर तो अपने परिवारों को भुखमरी से बचा पाते हैं तथा दूसरी ओर नगरीय लोगों को अपने उत्पादन के लिए आसानी से श्रमिक भी मिल जाते हैं।

❑

अर्द्ध-वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (b) ईसा पूर्व व ईस्वी 2. (b) शैल आवासों में
3. (c) लगभग 10,000 ई०पू० 4. (b) विशाल स्नानागार 5. (a) कैंबें

(ख) 1. महापदमानन्द 2. 24वें 3. राजदूत 4. सैंट फ्रांसीस

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (v) 5. (iii)

(ङ) 1. इतिहास से अभिप्राय प्राचीन घटनाओं के वास्तविक विवरण से है। यह प्राचीनतम् से लेकर वर्तमान समय तक के लोगों, स्थानों एवं घटनाओं का कालक्रमानुसार दस्तावेज हैं।

2. हडप्पा सभ्यता की कुछ महत्त्वपूर्ण इमारतों में विशाल स्नानागार अन्न भंडार तथा सभागार थे।
3. वर्तमान महावीर जैन धर्म के 24वें तथा अंतिम तीर्थंकर थे।
4. मेगस्थनीज सेल्युकस द्वारा पाटलिपुत्र में मौर्य दरबार में भेजा गया राजदूत था।

(च) 1. मगध के उत्थान के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी थे—

(i) महत्त्वाकांशी शासक—बिम्बिसार, अजातशत्रु तथा महापद्मनन्द सभी शासक महत्त्वाकांक्षी थे, जिन्होंने साम्राज्य विस्तार के लिए सभी साधनों को अपनाया। उन्होंने पड़ोसी राज्यों को वैवाहिक सम्बन्धों तथा विजय द्वारा अपने राज्य में मिला लिया।

(ii) उर्वर और समृद्ध भूमि—उर्वर गंगा का मैदान कृषि के लिए समृद्ध था। इस समृद्धि ने मगध राज्य को एक मजबूत अर्थव्यवस्था प्रदान की।

(iii) समृद्ध प्राकृतिक संसाधन—मगध के पास विशाल लौह भण्डार मौजूद थे, जिन्होंने उद्योगों तथा सामरिक अस्त्र-शस्त्रों के लिए विशेष योगदान दिया।

(iv) राजधानी नगरों की सामरिक स्थिति—मगध के राजधानी नगरों की सामरिक स्थिति अत्युत्तम थी। मगध की पुरानी राजधानी राजगृह पाँच पहाड़ियों से घिरी होने के कारण दुर्भेद्य थी। नई राजधानी पाटलिपुत्र एक 'जल-दुर्ग' थी जो गंगा, गण्डक तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित थी। इसकी सामरिक स्थिति ने व्यापार की प्रगति में बहुत योगदान दिया।

(v) व्यापार का विकास—सड़कों तथा नाव्य नदियों ने परिवहन की सुविधाएँ प्रदान कर व्यापार के विकास में योगदान दिया। मगध शासकों ने व्यापार से बहुत लाभ कमाया।

2. कनिष्ठ की उपलब्धियाँ तथा योगदान निम्न प्रकार हैं—

(i) कनिष्क का साम्राज्य उत्तर में बैक्ट्रिया से लेकर दक्षिण में उज्जैन तक तथा पूर्व में बनारस से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक विस्तृत था।

(ii) कनिष्क एक योग्य प्रशासक था। उसने अपने विशाल साम्राज्य को विभिन्न राज्यों में विभक्त कर दिया, जो उसके विश्वस्त राज्यपालों (क्षत्रपों) द्वारा शासित थे। वे स्वतन्त्र सैन्य शक्ति रखते थे।

(iii) कनिष्क कला तथा साहित्य प्रेमी था। उसके दरबार में महान विद्वान, दार्शनिक, कवि, संगीतज्ञ और नाटककार थे।

(iv) कनिष्क एक महान निर्माता भी था। उसने अनेक बौद्धमठों, विहारों स्तूपों तथा अन्य कलाकृतियों का निर्माण करवाया। उसके कार्यकाल में गान्धार कला शैली बहुत उच्च स्तर की थी। उसने मथुरा कला शैली के विकास के लिए भी योगदान दिया।

3. कलिंग का युद्ध अशोक के जीवन में बहुत बड़ा मोड़ लेकर आया। क्योंकि युद्ध में भयंकर विनाश तथा रक्तपात को देखकर अशोक का हृदय पश्चाताप से भर गया।

यह युद्ध अशोक के जीवन में एक मोड़ लाया। उसने भविष्य में हिंसा एवं युद्ध न करने का निर्णय लिया तथा 'धर्म विजय' की नीति अपनायी। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया और बुद्ध का सन्देश फैलाने के लिए उसने दूर-दूर तक धर्म प्रचारक भेजे।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (d) आकाश गंगा 2. (c) विषुवत् रेखा 3. (d) ऊषाकाल
4. (c) ग्लोब

(ख) 1. पृथ्वी 2. दक्षिण 3. पंचायती राज

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iv) 3. (iii) 4. (i)

(ङ) 1. सूर्य और उसके परिवार, जिसमें आठ ग्रह, सौ से अधिक उपग्रह लाखों क्षुद्र गृह 'उल्काएँ' व अनगिनत धूमकेतु हैं, को सौरमण्डल कहते हैं। सौरमण्डल के केन्द्र में सूर्य होता है, जिसके चारों ओर गृह चक्कर लगाते हैं।

2. देशान्तर प्रधान मध्याह्न (0° देशान्तर) रेखा के पूर्व तथा पश्चिम में किसी स्थान की कोणीय दूरी है। जिसे देशान्तर रेखा कहते हैं।

3. पटवारी के दो कार्य निम्नलिखित हैं—
   (i) गाँवों से भूमि राजस्व इकट्ठा करना।
   (ii) भूमि-अभिलेखों का रख-रखाव करना।

4. पंचायती राज गाँव में स्थानीय स्वशासी निकाय है। इसके तीन अंग हैं—ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत।

(च) 1. एक तारा मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैस का एक बड़ा गोला होता है। इनकी अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश होते हैं। जैसे—हमारा सूर्य एक तारा है।
एक ग्रह एक ग्लोब के आकार का आकाशीय पिंड है जो एक तारे में चारों ओर अण्डाकार कक्षाओं में घूमता है। तारा जो आकाश में अपनी निश्चित स्थिति में दिखाई देता है उसके विपरीत गृह अपनी स्थिति बदलता है। इसलिए इसे गृह या पथिक कहा जाता है। इनके पास अपना प्रकाश नहीं होता है। यह अपने तारे से प्रकाश ग्रहण करता है। जैसे—हमारी पृथ्वी एक गृह है जो सूर्य से ऊष्मा तथा प्रकाश प्राप्त करती है।

2. अपशिष्ट उपचार प्रक्रिया के लाभ इस प्रकार हैं—
   (i) जीवन की गुणवत्ता के सुधार—जीवन की गुणवत्ता तथा जिन क्षेत्रों में सिस्टम संचालित हुआ है। वहाँ स्वच्छता की स्थिति में पहले से अधिक सुधार हुआ है।

(ii) **प्राकृतिक पर्याष्वरण का संरक्षण**—यह हमें पर्यावरण को उसके मूल रूप में बनाए रखने में मदद करता है।

(iii) **जल की बचत तथा प्रसंस्करण**—जल के पुन:उपयोग से जल के अनावश्यक अपव्यय को रोका जा सकता है।

(iv) **धन की बचत**—यह पुनर्चक्रण के बाद उत्पाद का उपयोग करके धन बचाने में भी हमारी मदद करता है।

(v) **जीवन स्तर**—अपशिष्ट उपचार द्वारा अस्वच्छता से बचा जा सकता है। वातावरण स्वच्छ हो जाता है। आसपास रहने वाले लोग अच्छा स्वास्थ्य और समृद्ध जीवन बनाए रखते हैं।

3. **नगरपालिका या नगर परिषद**—20,000 से अधिक तथा 5 लाख से कम आबादी वाले नगरों में नगरपालिका की व्यवस्था होती है। मुजफ्फरनगर, रामपुर, मथुरा, बुलन्दशहर, जौनपुर आदि नगरों में नगरपालिकाएँ कार्यरत हैं। नगरपालिका के सदस्यों की संख्या नगर की आबादी के अनुसार निश्चित होती हैं। सदस्यों के चुनाव के लिए नगर को अनेक खण्डों में बाँटा जाता है।

नगरपालिका का संगठन—प्रत्येक खण्ड से एक प्रतिनिधि का चुनाव किया जाता है। चुनाव में सभी वयस्क (18 वर्ष से अधिक आयु) मतदाताओं को मत देने का अधिकार होता है। नगरपालिका का चुनाव लड़ने के लिए अभ्यर्थी की आयु कम-से-कम 25 वर्ष होनी चाहिए। नगरपालिका के चुने हुए सदस्य नगर के कुछ सम्मानित तथा अनुभवी नागरिकों का भी चुनाव करते हैं। ऐसे नागरिकों को 'एल्डरमैन' कहा जाता है। नगरपालिका के एक-तिहाई स्थान महिलाओं के लिए तथा कुछ स्थान अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए भी आरक्षित होते हैं। नगरपालिका के सदस्यों का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। किन्तु यदि इसे भ्रष्टाचार में लिप्त या अयोग्य सिद्ध होती है तो इसे पाँच वर्ष से पूर्व भी भंग किया जा सकता है।

पदाधिकारी—नगरपालिका के सदस्य अपने चेयरमैन (अध्यक्ष) का चुनाव स्वयं में से करते हैं, जो नगरपालिका की बैठकों की अध्यक्षता करता है तथा निकाय के सभी कार्यों में तालमेल रखता है। उपाध्यक्ष की सहायता करता है तथा अध्यक्ष की अनुपस्थिति में सभी कार्यों की देखरेख करता है।

नगरपालिकाओं में कुछ स्थायी कर्मचारी होते हैं, जिनमें प्रशासनिक अधिकारी, सेक्रेटरी, स्वास्थ्य अधिकारी, सफाई इंस्पेक्टर, म्युनिसिपल इंजीनियर, जूनियर इंजीनियर, चुंगी इंस्पेक्टर, शिक्षा अधिकारी आदि सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ अधिकारी राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं जबकि अन्य नगरपालिका द्वारा नियुक्त होते हैं।

नगरपालिकाओं तथा महापालिकाओं के प्रमुख कार्य—नगरपालिकाओं तथा महापालिकाओं के कार्यों को अनिवार्य तथा ऐच्छिक दो वर्गों में रखा जा सकता है। दोनों के समान कार्य हैं, जो निम्नलिखित हैं—

अनिवार्य कार्य :

(i) स्वच्छ पेयजल का प्रबन्ध तथा पथ-प्रकाश की व्यवस्था।
(ii) नगर में सड़कों, गलियों, नाले-नालियों की सफाई आदि।
(iii) अस्पतालों का प्रबन्ध केन्द्र बनाना, शिशु-रोगों के टीके या दवा की व्यवस्था आदि।
(iv) सड़कों, पुलों आदि का निर्माण तथा मरम्मत जिससे यातायात सुचारू हो।
(v) शवदाह गृह, विद्युत शवदाह गृह, कब्रिस्तान आदि के लिए मैदान की उपलब्धता और व्यवस्था।
(vi) बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल तथा पुस्तकालय, संग्रहालय, चिड़ियाघर आदि की व्यवस्था।
(vii) जन्म तथा मृत्यु पंजीकरण।
(viii) फल, सब्जी, उपभोक्ता वस्तुओं के विक्रय के लिए बाजारों की व्यवस्था।

ऐच्छिक कार्य :

(i) आग बुझाने के लिए अग्निशामक गाड़ियों का प्रबन्ध।
(ii) पार्क, खेल के मैदान, पिकनिक स्थल, रात्रि आश्रम, बाल घर, पशु आवास, वाहन पार्किंग स्थल आदि का निर्माण।
(iii) सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण।
(iv) जल सम्भरण, विद्युत सम्भरण तथा स्थानीय बस-सेवाओं का प्रबन्ध करना।

प्रमुख विभाग—नगरपालिका विभिन्न कार्यों को विभिन्न विभागों द्वारा निष्पादित करती है जैसे—स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, इंजीनियरिंग विभाग, चुंगी विभाग आदि।

आय के स्त्रोत—(i) सम्पत्ति कर, (ii) व्यावसायिक एवं (iii) जल कर, (iv) इमारतों का किराया, (v) टोल टैक्स, (vi) ऑक्ट्रोई, (vii) वाहन टैक्स, (viii) सार्वजनिक प्रकाश तथा सार्वजनिक शौचालय, (ix) राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान आदि नगरपालिकाओं के विभिन्न विभागों के आय के स्त्रोत हैं।

❑